मसीही जीवन

(द्वितीय संस्करण)

1998

लेखक

सनी डेविड

सत्य-सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक:
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली 110049

CHRISTIAN LIFE
Hindi Radio Sermons
by **Sunny David**

Second Printing 1997

2000 Copies

मुद्रक:
प्रिंट इण्डिया
मायापुरी, नई दिल्ली

विषय सूची

1. मसीही व्यवहार 1
2. एक मसीही का उद्देश्य 6
3. एक मसीही का गर्व 12
4. एक मसीही की आशा 17
5. मसीही जीवन 24
6. एक उद्धार पाया हुआ जीवन 30
7. एक तैयार जीवन 35
8. एक बदला हुआ जीवन 41
9. एक नया जीवन 47
10. एक छिपा हुआ जीवन 53
11. एक नया इन्सान 58
12. एक नई सृष्टि 63

"सत्य सुसमाचार"

मसीह यीशु के सुसमाचार का यह कार्यक्रम आप रेडियो पर सुन सकते हैं।

प्रत्येक बृहस्पतिवार को रात में नौ बजे और प्रत्येक रविवार को रात में 8:45 पर।

ये कार्यक्रम रेडियों श्रीलंका से 19, 25 तथा 41 मीटर बैंड पर सुने जा सकते हैं।

प्रस्तुतकर्त्ता
मसीह की कलीसिया

वक्ता
सनी डेविड

भूमिका

एक मसीही कौन है ? किस प्रकार उसे पहचाना जा सकता है ? क्या मसीही जीवन में कुछ विशेषता है? क्या कोई मनुष्य मसीही जन्म से होता है, या वह एक मसीही बनता है ? किस प्रकार एक मसीही बना जा सकता है ? ये और ऐसे ही अनेक अन्य प्रश्नों के उत्तर हमारे अनेक पाठक जानना चाहते हैं । और मेरी आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक को पढ़कर पाठक को अपने प्रश्नों के उत्तर मिल ज़ाएंगे ।

इस पुस्तक में पाया जानेवाला प्रत्येक पाठ सर्वप्रथम रेडियो प्रसारण के लिये लिखा गया था । उन्हीं बारह प्रवचनों को अब इस पुस्तक का रूप दिया गया है ।

मसीहीयत और मसीही लोगों के विषय में अकसर लोगों की कुछ गलत धारणाएं रही हैं । और मेरी आशा है कि इस पुस्तक को पढ़ने से हमारे पाठकों को ऐसी–ऐसी अनुचित धारणाओं से मुक्ति मिल जाएगी ।

– सनी डेविड

मसीही व्यवहार

यदि किसी भी समय में मसीह के सुसमाचार को सुनने की मनुष्य को सबसे अधिक आवश्यकता थी, तो वह समय वास्तव में आज है । क्योंकि मसीह का सुसमाचार न केवल पाप से हमारा उद्धार ही करता है परन्तु वह हमें यह भी सिखाता है कि इस पृथ्वी पर हम अपना जीवन भक्ति तथा पवित्रता के साथ निर्वाह करें । आज हम सब वास्तव में बड़े ही खराब दिनों में सांस ले रहे हैं । यह वह समय है जब कि पाप को बड़ा ही रंगीन और आकर्षित करके प्रदर्शित किया जा रहा है । जिन बातों की पिछली पीढ़ी में लोग कल्पना तक भी नहीं कर सकते थे वही बातें आज सब जगह खुले आम हो रही हैं । और यहां तक कि ऐसी–ऐसी बातों को न केवल फ़ैशन का नाम देकर नज़र–अन्दाज़ ही किया जा रहा है परन्तु लोग उनमें घमन्ड का अनुभव करते हैं!

एक समय था जबकि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा आज्ञा देकर लोगों से कहा था कि "कोई स्त्री पुरूष का पहिरावा न पहिने, और न कोई पुरूष स्त्री का पहिरावा पहिने ।" (व्यवस्थाविवरण २२:५) । परन्तु आज सड़कों पर और स्वयं अपने घरों में हम क्या देखते हैं ? लड़कियां लड़कों की तरह पैन्ट और कमीज़ पहिन कर घूम रही हैं और लड़के लड़कियों की तरह बाल बढ़ाकर घूम रहे हैं । यहां तक कि कभी–कभी तो लोगों से पूछना पड़ जाता है कि "आप लड़के हैं या लड़की हैं ?" पवित्र बाइबल में लिखा है, कि स्त्रियां संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारें । (१ तीमुथियुस २:६) । परन्तु इसके विपरीत आज अश्लीलता तथा नग्नता का प्रदर्शन फ़ैशन के नाम में खुले–आम

किया जा रहा है । आज हम सब इस बात से परिचित हैं कि वर्तमान समय में स्त्रियों के विरूद्ध अपराधों की संख्या बड़ी ही तेज़ रफ़तार से बढ़ रही है । और इसका एक मुख्य कारण है स्वयं स्त्रियों का पहिनावा जिसके द्वारा तंग तथा ऊंचे–ऊंचे कपड़े पहिनकर शरीर के अंगों की नुमाईश की जा रही है । प्रभु यीशु ने एक बार लोगों से कहा था कि, "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि व्यभिचार न करना । परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ," प्रभु ने कहा था "कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले तो वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका ।" (मत्ती ५:२७,२८) । आज जबकि स्त्रियां तंग, ऊंचे और भड़कीले कपड़े पहिनकर सब जगह घूम रही हैं, और तब यदि उन पर कोई कुदृष्टि डालता है तो वास्तव में उसका ज़िम्मेदार कौन है ?

फिर हम यह भी देखते हैं, कि आज का साहित्य कितना अशलील और गंदा है । किसी भी किताबों की दुकान के भीतर चले जाइए या पटरी पर बैठकर किताबें बेचने–वालों की पुस्तकों पर नज़र डालिये । रेलवे प्लैटफ़ार्म पर बिकनेवाली पुस्तकों और मैग्ज़ीनों पर दृष्टि डालिए । आप को अशलील और गन्दे साहित्य के अलावा और कुछ नहीं मिलेगा । और आश्चर्य की बात तो यह है कि लोग उन नावलों और मैग्ज़ीनों को रोज़ाना मोल लेकर पढ़ते हैं । कभी–कभी यह बात समझने में मुझे बड़ी ही कठिनता का अनुभव होता है कि ऐसा क्यों है कि हम लोगों को सब जगह जबकि यह बताते हैं कि आप हमारे यहां से सत्य–सुसमाचार की बीस पुस्तकें केवल बीस रुपए भेजकर प्राप्त कर सकते हैं । और इसी में डाक–खर्च भी शामिल है, और जबकि इन बीस पुस्तकों का मूल्य वास्तव में लगभग दो सौ रुपए है । लेकिन फिर भी हमारे लाखों श्रोताओं में से कभी–कभार कोई एक जन इन पुस्तकों को मंगवाता है ! सोचिए, परमेश्वर के वचन से सम्बन्धित अच्छी और जीवन–दायक बातें सिखानेवाली बीस पुस्तकें, कुल बीस रुपए में भी लोग नहीं मंगवाना चाहते । जबकि

मन पर गलत प्रभाव डालनेवाली और चरित्र को बिगाड़ने वाली सिनेमा सम्बन्धित पत्रिकाएं, गन्दे नॉवल और अशलील पुस्तकें किताबों की दुकानों पर आते ही बिक जाती हैं । पान चबाकर थूकने के लिये और शराब पीकर चरित्र को बिगाड़ने के लिये लोगों के पास धन की कमी नहीं है । परन्तु परमेश्वर के वचन की बातों को सीखने के लिये यदि एक रुपया भी देना पड़ जाए तो लोगों को बड़ा भारी लगता है । प्रभु यीशु ने सच ही कहा था, कि "जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए ।" (यूहन्ना ३:२०) ।

मित्रो आज हम सब किस दिशा में जा रहे हैं ? हम अपने जीवनों से अन्य लोगों के सामने क्या आदर्श रख रहे हैं ? हमारी बोल– चाल कैसी है ? हमारा पहिनावा कैसा है ? हमारा चाल–चलन कैसा है ? हम अपने बच्चों और भाई–बहनों के सामने कैसा उदाहरण रख रहे हैं ? यदि हम अपने बच्चों के सामने सिगरेट और शराब पीते हैं तो क्या हम अपने बच्चों को सिखा सकते हैं कि वे ऐसा न करें ? यदि हम अपने बच्चों पर ध्यान नहीं रखते कि वे कैसा साहित्य पढ़ते हैं, और कैसे कपड़े पहिनते हैं, और किस तरह के लोगों के साथ वे संगति रखते हैं, तो यदि वे बाद में बिगड़ जाएं तो इसका ज़िम्मेदार कौन कहलाएगा ?

यह सच है, कि आज हमने विज्ञान तथा तकनीकी के दृष्टिकोण से बड़ी तरक्की कर ली है । आज हमारे पास विद्यालय और महा–विद्यालय हैं । हम उन्नतिशील लोग हैं, हम आगे बढ़ रहे हैं । हमारे नगरों और गांवों में लोगों को शिक्षित तथा सूचित करने के लिये टेलेविज़न केन्द्र स्थापित किए जा रहे हैं । परन्तु नैतिक दृष्टिकोण से आज हम कहाँ है ? हमारा चरित्र कितना उन्नति कर रहा है ? नैतिकता और चरित्र के दृष्टिकोण से हम वास्तव में बड़े ही नीचे गिरते जा रहे हैं । परमेश्वर के पवित्र

आत्मा की प्रेरणा से लिखकर जिस बात को बाइबल के लेखक ने आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व कहा था, वह बात आज हमें अपने संसार में और अपने देश में और अपने नगरों और गांवों में और अपने घरों में और स्वयं अपने ही जीवनों में प्रत्यक्ष पूरी होती दिखाई पड़ रही है । बाइबल के लेखक ने कहा था, "कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे । क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता–पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतध्न, अपवित्र, मायारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी, विश्वासधाती, ढीठ, घमन्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुख विलास ही के चाहनेवाले होंगे ।" (२ तीमुथियुस ३:१–४) क्या यह बातें आज सच नहीं हैं ?

सैंकड़ो वर्ष पूर्व प्रभु यीशु ने एक नियम की स्थापना करके कहा था, कि जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें तुम भी उन के साथ वैसा ही करो । (मत्ती ७:१२) । यदि इस सुनहरे नियम को पालन करने की सबसे अधिक आवश्यकता मनुष्य को कभी भी थी तो वह समय अब है । छोटी छोटी बातों पर क्रोधित होकर लोग एक दूसरे की जान ले रहे हैं । मनुष्य इतना अधिक लोभी तथा स्वार्थी बन गया है कि अपनी इच्छा और स्वार्थ को पूरा करने के लिये वह सदा तैयार रहता है । धर्म और जाति के नाम पर खून को पानी की तरह बहाया जा रहा है । लूटपाट और आगज़नी की घटनाएं अब मात्र छोटी सी बात लगती है । एक ही परमेश्वर के बनाए हुए लोग आपस में एक दूसरे को नाश कर रहे हैं । कभी कभी ऐसा प्रतीत होता है कि जंगलों में रहनेवाले जानवर उन मनुष्यों से अधिक सभ्य हैं जो अपने आपको पढ़ा–लिखा, शिक्षित, उन्नतिशील और सभ्य कहते हैं ।

पवित्र बाइबल में लिखा है, "धोखा न खाओ," क्योंकि "परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा " (गलतियों ६:७) । एक दिन परमेश्वर हम

सब का न्याय करेगा । और वह न्याय परमेश्वर अपने उस वचन के अनुसार करेगा जिसे लिखवाकर उसने अपनी पवित्र बाइबल में हमें दिया है । क्योंकि बाइबल से हम यह सीखते हैं कि परमेश्वर ने हमें पाप से मुक्ति दिलाने के लिए क्या किया है । और वह मुक्ति हमें किस प्रकार मिलती है । बाइबल हमें सिखाती है कि हम किस तरह इस पृथ्वी पर एक पवित्र जीवन व्यतीत कर के स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन सकते हैं । परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से मुक्ति दिलाकर नया इन्सान बनाने के लिये अपने पुत्र यीशु मसीह को जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये बलिदान कर दिया था । और बाइबल कहती है, कि यदि कोई मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास लाकर अपने पापों से फिरता है और बपतिस्मा लेता है तो वह अपने पापों से उद्धार पाकर मसीह में एक नया इन्सान बन जाता है । (२ कुरिन्थियों ५:१७ ; गलतियों ३ : २) । बाइबल के नए नियम में लिखी यीशु मसीह की शिक्षाओं को मानकर ही मनुष्य पवित्र तथा एक धर्मी जीवन व्यतीत कर सकता है । और वास्तव में यदि आज पृथ्वी पर अधिक से अधिक लोग प्रभु यीशु मसीह के नए नियम की शिक्षाओं का पालन करने लगें तो ये सब बातें जिनके बारे में हमने अपने पाठ में देखा है, लोगों के जीवनों से दूर हो जाएंगी और उनके विपरीत प्रेम, शान्ति और आनन्द लोगों के मनों में आ जाएंगे । सुनिये कि प्रभु यीशु मसीह के नए नियम से हमें क्या शिक्षा मिलती है । उसमें लिखा है :

"प्रेम निष्कपट हो ; बुराई से घृणा करो ; भलाई में लगे रहो अपने सतानेवालों को आशीष दो ; श्राप न दो । आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो और रोनेवालों के साथ रोओ । आपस में एक सा मन रखो अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो । बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो । जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक

सब मनुष्यों के साथ मेल–मिलाप रखो । हे प्रियो अपना पलटा न लेना ; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है, मैं ही बदला दूँगा । परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला ; यदि प्यासा हो तो उसे पानी पिला क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा ।" और,"बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो ।" (रोमियों १२:६,१४–२१) ।

यदि आज हम सब प्रभु यीशु मसीह के नए नियम में लिखी बातों के अनुसार चलने लग जाएं तो निश्चय ही हमारे जीवन बदल जाएंगे, हमारा वर्तमान बदल जाएगा और हमारा भविष्य भी बदल जाएगा । तब हम अपने ही हित की नहीं परन्तु दूसरों की भलाई की चिन्ता करेंगे हम अन्य लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा हम चाहते हैं कि लोग हमारे साथ करें, और निश्चय ही हम सब के साथ वैसा ही प्रेम रखेगें जैसा प्रेम हम स्वयं अपने आप से करते हैं । यह वह उत्तम जीवन है जो हमें प्रभु यीशु मसीह से मिलता है । जब हम उस में विश्वास लाते हैं और उसकी आज्ञा को मानते हैं तो उस में होकर हम एक नए इंसान बन जाते हैं । क्या अपने जीवन को आज आप प्रभु यीशु को देने को तैयार हैं ?

एक मसीही का उद्देश्य

लगभग सभी लोगों के जीवनों में कोई न कोई उद्देश्य होता है । कुछ लोग अधिक से अधिक पढ़कर विद्वान बनना चाहते हैं । वे अपना सारा जीवन पढ़ाई में ही लगा देते हैं । वे ज़्यादा से ज़्यादा डिग्रियां प्राप्त करना चाहते हैं । कुछ अन्य लोगों के जीवन का उद्देश्य होता है एक अच्छा डॉक्टर या

इन्जीनियर या टीचर बनना । फिर कुछ लोग बड़े व्योपारी बनना चाहते हैं वे अधिक से अधिक पैसा कमाकर अपने व्योपार को बढ़ाना चाहते हैं । उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य होता है एक बहुत बड़ा व्योपारी बनना । जो कुछ भी मनुष्य प्राप्त करना चाहता है या बनना चाहता है उसके लिये वह अपना सारा समय और स्वयं अपने आप को पूरी तरह से लगा देता है । प्रभु यीशु ने एक बार लोगों के सामने यह सवाल रखा था, कि "यदि कोई मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले परन्तु अन्त में स्वयं अपनी ही आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा?" मनुष्य प्रयत्न करके संसार की अनेक वस्तुओं को प्राप्त कर सकता है । वह एक बड़ा वकील या डॉक्टर या वैज्ञानिक बन सकता है; और धन सम्पत्ति तथा प्रसिद्धि और ख्याति प्राप्त करके एक बहुत बड़ा आदमी बन सकता है । परन्तु ये सब वस्तुएं मनुष्य का पाप से उद्धार नहीं कर सकतीं । अब इसका मतलब यह नहीं है कि इन वस्तुओं को प्राप्त करने का प्रयत्न ही हमें नहीं करना चाहिए । हमें अच्छे डॉक्टरों की आवश्यकता है, अच्छे वकीलों और अच्छे शिक्षकों की आवश्य्रकता है । किन्तु बुराई इस बात में है, कि जब किसी मनुष्य के जीवन का एकमात्र प्रमुख उद्देश्य ही इन वस्तुओं को प्राप्त करना हो जाता है, तो फिर उसे उसके आगे और कुछ दिखाई नहीं देता । वह उस किसान की तरह बन जाता है जिसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था एक बड़ा और धनी आदमी बनना । और एक बार जब उसके यहां इतनी अधिक फ़सल हुई कि उसके पास रखने को भी जगह नहीं थी, और उसे बड़े–बड़े नए गोदाम बनवाने पड़े तो वह फूलों नहीं समाया , और उसने खुश होकर अपने मन में कहा कि अब मेरे पास इतनी अधिक सम्पत्ति हो गई है कि अब मै बहुत वर्षों तक खूब ऐश उड़ाऊँगा । परन्तु उसी समय उसे एक आवाज़ सुनाई पड़ी, और परमेश्वर ने उससे कहा कि अरे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, तब जीवन भर जो कुछ तू ने अपने लिये

इकट्ठा किया है वह सब किस का होगा ?

सो जिस बात पर हम विचार कर रहे हैं , वह इस दृष्टान्त से स्पष्ट हो जाती है । अर्थात् जब मनुष्य के जीवन का एक मात्र उद्देश्य केवल धन सम्पत्ति एकट्ठा करना या जगत की कोई अन्य वस्तु प्राप्त करना ही बन जाता है, तो वह इस सच्चाई को नहीं देख पाता कि वह एक आत्मिक प्राणी है, और उसे सबसे अधिक पाप से मुक्ति की आवश्यकता है । वह अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये उसमें इतना अधिक खो जाता है, कि वह भूल जाता है कि इस ज़मीन पर वह एक यात्री के समान है और किसी भी समय वह वापस बुला लिया जाएगा, और जब वह इस जगत से जाएगा तो वह अपने साथ कुछ भी लेकर नहीं जाएगा । अपने ध्येय की पुर्ति करने में मनुष्य ऐसा लीन होता जा है कि वह कभी यह भी नहीं सोचता कि जब वह इस संसार से जाएगा तो वह कहां जाएगा !

प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु प्रत्येक उस वचन से जीवित रहेगा जो परमेश्वर के मुख से निकलता है । अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य को अपने शरीर के लिये रोटी की आवश्यकता है , उसी तरह से मनुष्य को अपनी आत्मा के लिये आत्मिक भोजन, यानी परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है । जगत में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जो मनुष्य को पाप के वश से छुड़ाकर आत्मिक जीवन दे सके । केवल परमेश्वर का वचन ही ऐसा सामर्थी है कि न केवल वह मनुष्य का पाप से उद्धार ही करता है, परन्तु यदि मनुष्य उसे मानकर उस पर चले तो वह उसकी ऐसी अगुवाई करता है जिसका परिणाम स्वर्ग में अनन्त जीवन होता है । इसलिये बाइबल में लिखा है, कि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यह है, कि वह परमेश्वर का भय माने और उसकी आज्ञाओं का पालन करे । (सभोपदेशक १२:१३) ।

एक अन्य स्थान पर प्रभु यीशु ने कहा था, कि, "यदि तेरा

हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल । टुन्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो हाथ रखते हुए तू नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं । और यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल । लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो पांव रहते हुए तू नरक में डाला जाए । और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल । काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो आंख रखते हुए तू नरक में डाला जाए । " (मरकुस ९:४३–४७) ।

प्रभु यीशु के इन शब्दों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि आत्मिक जीवन शारीरिक जीवन से कहीं अधिक उत्तम है । और यदि स्वर्ग में आत्मिक जीवन को प्राप्त करने के लिये पृथ्वी पर शारीरिक जीवन को खोना भी पड़े तो यह भला है । और एक बड़ी ही विशेष बात यहां से हम यह सीखते हैं कि यदि हमारे जीवन में कोई भी ऐसी वस्तु है जो परमेश्वर की इच्छा पर चलकर स्वर्गीय जीवन में प्रवेश करने से हमें रोकती है तो उस ठोकर के कारण को हम अपने जीवन से निकालकर फेंक दें । चाहे वह चीज़ कितनी भी कीमती या ज़रुरी क्यों न हो; चाहे वह वस्तु हमारे शरीर का कोई अंग ही क्यों न हो ! यह भला है, प्रभु यीशु ने कहा था कि उस चीज़ के बिना या उससे अलग होकर तू स्वर्ग मे प्रवेश करे, विपरीत इसके कि उस वस्तु के कारण तू नरक में डाला जाए । मनुष्य के लिये ठोकर का कारण कोई भी वस्तु हो सकती है । कुछ लोगों के लिये ठोकर का कारण उनका धन हो सकता है; कुछ के लिये उन का कारोबार हो सकता है । अर्थात् कोई भी वस्तु जिसे मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से भी अधिक चाहता है , वह उसके लिये ठोकर का कारण है । अपने मन को जांचकर देखिए , कि वह कौन सी चीज़ है जो आपको परमेश्वर की इच्छा पर चलने से रोकती है? कौन सी

वह वस्तु है, जिस के कारण आप परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मानते ? क्या वह आपका अभिमान है या अविश्वास है ? क्या आप अपने कारोबार में या शिक्षा में इतने अधिक व्यस्त हैं, कि परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने का आपको समय ही नहीं मिलता? क्या आप किसी बुरी आदत के शिकार हैं? या क्या आप अपने बुरे चाल–चलन के कारण परमेश्वर के पास नहीं आना चाहते ? कौन सी वह चीज़ है आपके जीवन में जो परमेश्वर की आज्ञा को मानने से या उसकी आज्ञा पर चलने से आप को रोकती है? प्रभु यीशु कहता है, कि उस वस्तु को आप अपने जीवन से अलग कर दें । क्योंकि उसके बिना स्वर्ग के अनन्त जीवन में प्रवेश करना इस से भला है कि उसके रहते मनुष्य, उसके कारण, नरक में डाला जाए ।

कुछ समय पहिले मैं एक नौजवान के साथ बाइबल अध्ययन कर रहा था । मैंने उसे बताया कि बाइबल हमें बताती है, कि पृथ्वी पर हर एक मनुष्य पापी है और इस कारण परमेश्वर से अलग है । परन्तु परमेश्वर सबका उद्धार करना चाहता है, और अपने पुत्र यीशु मसीह को संसार में भेजकर उसने प्रत्येक मनुष्य को यह अवसर दिया है कि सब यीशु के द्वारा अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर लें और उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन जाएं । मैंने उस व्यक्ति को यह भी बताया, कि यीशु परमेश्वर की मनसा से जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस पर चढ़ाया गया था । और यदि कोई भी मनुष्य उस के भीतर विश्वास लाएगा और अपने पापी जीवन से मन फिराएगा और अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लेगा, तो यीशु के बलिदान के कारण परमेश्वर उस मनुष्य के सब पापों को क्षमा कर देगा । मैंने प्रभु यीशु की इस आज्ञा को, बाइबल में से पढ़कर उसे बताया, कि यीशु ने कहा है, कि जो मनुष्य मुझ पर विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा । (मरकुस १६:१६) । उस ने बड़ी ही अच्छी तरह से सब बातों को

सुना और विचार किया । और फिर उसने कहा, कि मैं विश्वास तो करता हूँ, परन्तु बपतिस्मा लेने के लिये मैं अपने घरवालों से पूछकर बताऊँगा । प्रत्यक्ष ही है, कि वह नवयुवक परमेश्वर से भी अधिक अपने घरवालों से डरता था ; उसे अपनी आत्मा के उद्धार से भी अधिक प्यारा अपना परिवार था ; उसका उद्देश्य परमेश्वर को नहीं परन्तु मनुष्यों को प्रसन्न करना था ।

किन्तु यदि हम वास्तव में परमेश्वर का भय मानकर उसकी मर्ज़ी पर चलना चाहते हैं । तो परमेश्वर के भय से बड़ा और कोई भय हमारे जीवन में नहीं होना चाहिए, और उसकी आज्ञा से बढ़कर और कोई दूसरी आज्ञा हमारी ज़िन्दगी में नहीं होनी चाहिए । उसकी इच्छा का स्थान हमारे जीवनों में सबसे बड़ा और प्रमुख होना चाहिए । जगत की नाशमान वस्तुओं को प्राप्त करने के विपरीत हमारे जीवनों का उद्देश्य स्वर्ग को प्राप्त करना होना चाहिए । क्योंकि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त करले और अन्त में नरक में अपनी आत्मा को खोए तो उसे क्या लाभ होगा ? परन्तु यदि कोई मनुष्य अपनी आत्मा को बचाने के लिये सारे जगत को भी खो दे तो उसकी प्राप्ति कितनी विशाल होगी!

स्वर्ग से बढ़कर चाहने योग्य वस्तु और कोई नहीं है । और नरक से बढ़कर भयानक वस्तु और कोई नहीं है । केवल यीशु ही मनुष्य को नरक में जाने से बचा सकता है, क्योंकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है । और केवल वही हमें स्वर्ग में जाने के योग्य बना सकता है, क्योंकि मार्ग और सच्चाई और जीवन केवल वही है । प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह अपने सारे मन से परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के भीतर विश्वास लाए और उसकी आज्ञा मानकर अपने पापों से मन फिराए और बपतिस्मा ले और उसकी आज्ञाओं को मानकर उसके बताए हुए मार्ग पर चले ।

प्रभु यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा था, कि "तुम चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे ? क्योंकि अन्य जाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते

हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए । इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी ।" (मत्ती ६:३१–३३)

आपके जीवन का उद्देश्य क्या है ? क्या परमेश्वर आपके जीवन में पहला है ? क्या आप अपना जीवन केवल शरीर के लिये ही व्यतीत कर रहे हैं ? आत्मिक दृष्टिकोण से आज आप कहां हैं ?

एक मसीही का गर्व

जब आप किसी की मृत्यु के बारे में सुनते हैं तो आप क्या सोचते हैं ? प्रतिदिन हम ऐसी दुर्घटनाओं के बारे में सुनते हैं जिन में लोग मारे जाते हैं । प्रतिदिन सड़क दुर्घटनाओं में हजारों लोगों की जाने जाती हैं समाचार पत्रों में हम पढ़ते हैं और समाचारों में हम सुनते हैं, कि कहीं रेल दुर्घटना में सौ लोग मर गए तो कहीं बस के उलटने से या नदी में गिर जाने से पचास लोग मर गए । हवाई जहाज़ खराब होकर या किसी वस्तु से टकराकर नीचे गिर जाते हैं , और चन्द ही मिनटों में सैंकडों लोग मौत के शिकार हो जाते हैं । फिर बहुतेरे लोग हैं जो लड़ाई झगड़ों और दंगों में हर एक दिन मारे जाते हैं । ये सब निर्दोष लोग होते हैं, उन्हें कोई बीमारी नहीं थी , वे सब हमारी ही तरह स्वस्थ थे । परन्तु अचानक कोई दुर्घटना हुई और वे मर गए । मान लीजिए, जिस जगह वे लोग थे उसी जगह आप होते ? आप क्या सोचते हैं? जब कोई अचानक मर जाता है ? जब आप एक बेजान देह को पड़े हुए देखते हैं, तो आपके मन में क्या विचार आता है ? मृत्यु हमारा ध्यान बार–बार इस बात पर दिलाती है कि मनुष्य का जीवन बड़ा ही छोटा है और अनिश्चित है ।

बाइबल का लेखक एक जगह लिखकर कहता है कि, "हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएं, तौभी उनका घमन्ड, केवल कष्ट और शोक ही शोक है; क्योंकि वह जल्द कट जाती है और हम जाते रहते हैं" इसलिये, हे परमेश्वर "हम को अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएं ।" (भजन ९०:१०,१२) ।

मनुष्य इस पृथ्वी पर एक यात्री के समान है। हममें से कोई नहीं जानता कि कब हमारी यात्रा समाप्त हो जाएगी । परन्तु, तौभी अपने व्यवहार और कामों के द्वारा हम ऐसा प्रकट करते हैं जैसे कि यह संसार हमारा सदा का घर हो और संसार की ये नाशमान वस्तुएं मानों हमेशा हमारे साथ रहेंगी ! हम अधिक से अधिक बटोरना और जमा करना चाहते हैं । और अकसर पृथ्वी पर की इन वस्तुओं में हम इतने अधिक लीन हो जाते हैं कि हम अपने जीवनों के वास्तविक उद्देश्य को भी भूल जाते हैं। कुछ लोगों को अपनी सुंदरता पर घमन्ड होता है, और कुछ लोगों को अपने शरीर की शक्ति पर घमन्ड है । परन्तु हम भूल जाते हैं, कि यह देह और शक्ति मिट्टी में ही मिल जाएगी। फिर, जिन के पास धन –सम्पत्ति है या ज़मीन–जायदाद है वे अपनी सम्पत्ती और जायदाद पर घमन्ड करते हैं । कुछ लोग अपने पद पर घमन्ड करते हैं, और ऊंची कुर्सी पर घमन्ड करते हैं । वास्तव में सभी मनुष्य किसी न किसी वस्तु पर घमन्ड करते हैं । परन्तु मनुष्य का यह सारा घमण्ड व्यर्थ है, इस से मनुष्य को कोई लाभ नहीं होता । क्योंकि जब वह इस संसार से जाता है तो वह अपने साथ कोई वस्तु नहीं ले जाता । न तो कोई चीज़ फिर उसके किसी काम आएगी, और न किसी वस्तु से फिर कभी वह कोई आन्नद ले पाएगा । उसकी सुन्दरता और शक्ति मिटटी का कौर बन जाती है । और अपना सब धन सम्पत्ति वह औरों के लिये छोड़ जाता है, और उसकी कुर्सी पर कोई और मनुष्य आकर बैठ जाता है। सो कितना व्यर्थ है मनुष्य

का घमण्ड !

परन्तु सुनिये, कि प्रेरित पौलुस बाइबल में एक जगह क्या कहता है, वह कहता है, " पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करुं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं ।" (गलतियों ६: १४) । कैसी अजीब बात है यह जबकि दुनिया के लोग अपने धन –दौलत पर और अपनी शक्ति तथा प्रसिद्धि पर गर्व करते हैं, यहां एक ऐसा इन्सान है जो एक ऐसी वस्तु पर घमण्ड करता है जिसे लोग "मूर्खता की बात" कहते हैं । क्या इसका अर्थ यह है कि पौलुस के पास संसार की कोई ऐसी वस्तु नहीं थी जिस पर वह घमण्ड करता ? ऐसा कदापि नहीं था । उसके बारे में हम पढ़ते हैं कि वह बड़ा ही बुद्विमान व्यक्ति था ; उसके पास इतनी अधिक विद्या थी कि परमेश्वर ने उसे बाइबल के नये नियम की सत्ताइस में से चौदह पुस्तकों को लिखने के लिये इस्तेमाल किया था । वह बड़ा ही ताकतवर इन्सान था । धन–दौलत और पद के दृष्टिकोण से भी वह एक बहुत बड़ा आदमी था। उसके पास पृथ्वी की वे लगभग सभी वस्तुएं थी जिन पर लोग घमण्ड करते हैं और अपना भरोसा रखते हैं । और धार्मिक दृष्टिकोण से भी लोगों में उसका बड़ा मान था। ये सभी वस्तुएं किसी भी मनुष्य को घमण्ड के नशे में बहका सकती हैं। लेकिन पौलुस का कथन यह था कि यद्यपि ये सभी बातें मेरे लाभ की तो हैं, अर्थात इनके द्वारा मुझे मान–सम्मान और बड़ाई तो मिलती है , परन्तु मैं इन सब बातों को अपने लिये हानि समझता हूं। क्योंकि मसीह का अनुसरण करने में ये सब मेरे आगे बाधक हैं। वह यह भी कहता है, कि इन सब वस्तुओं को, जिनमें लोग घमण्ड करते हैं, मैं कूड़ा समझता हूं । पौलुस के जीवन का एक मात्र उद्देश्य यीशु मसीह और उसका क्रूस था (फिलिप्पियों ३:४–११) । इसलिये वह कहता है , कि ऐसा न हो कि मैं और किसी बात पर घमण्ड करूँ, केवल

हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं ।

कितनी आश्चर्यपूर्ण बात है ! यहां एक इन्सान है जिसके पास पृथ्वी के दृष्टिकोण से सब कुछ है । परन्तु वह उन सब बातों को कूड़ा करकट समझता है, और एक ऐसी वस्तु के भीतर घमण्ड करता है जिसे संसार के लोग अकसर मूर्खता कहकर टाल देते हैं । मेरे विचार में यह एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात है, और एक ऐसी खास बात है जिस पर हम सब को अवश्य ही ध्यान देना चाहिए । पर ऐसी कौन सी महान बात है प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के भीतर कि उसके आगे पौलुस दुनिया की सभी अन्य बातों को कूड़ा समझता था, और केवल उस क्रूस के भीतर ही घमण्ड करता था ? परन्तु, इससे पहले कि हम मसीह के क्रूस की महानता पर विचार करें यह समझ लेना भी बड़ा ही आवश्यक है कि पौलुस यहां एक लकड़ी या पत्थर या सोने– चांदी के क्रूस के बारे में नहीं कह रहा है । परन्तु यहां वह मसीह के उन दुखों का वर्णन कर रहा है जो उसने क्रूस के ऊपर सारी मानवता के लिये उठाए थे । वहां, उस क्रूस के ऊपर, परमेश्वर का एकलौता पुत्र योशु मसीह , दो डाकूओं के बीच में एक अपराधी की तरह लटकाया गया था । लोगों ने उसके मुंह पर थूका था, और उसे थप्पड़ और घूसे मारे थे । यद्यपि उस समय के कानून ने उसे बिलकुल निर्दोष पाया था, परन्तु वह कुछ लोगों की ईर्ष्या और डाह का शिकार बन चुका था । और जब उसके सतानेवालों ने उस का खूब निरादर कर लिया था , तो उन्होंने उसे आसमान और ज़मीन के बीच एक क्रूस पर लटका दिया था । और फिर वे तालियां बजा–बजाकर उसका हंसी और ठट्ठा कर रहे थे, और कह रहे थे, कि तूने औरों को तो बचाया, तूने औरों को तो ज़िन्दगी दी, पर अब अपने आप को बचा ले । परन्तु क्रूस पर लटका हुआ परमेश्वर का पुत्र फिर भी कराह–कराह कर उन लोगों के लिये बार–बार प्रार्थना करके कह रहा था, कि "हे पिता

तू इन्हें क्षमा करना क्योंकि ये वास्तव में नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।"

प्रभु यीशु को मालूम था कि वह दुख उठाएगा और क्रूस के ऊपर मारा जाएगा । वह इस काम को करने के लिये ही स्वर्ग से तैयार होकर आया था । यद्यपि वह निर्दोष होते हुए भी सताया गया और मारा गया ; परन्तु व्यर्थ में नहीं । इन सब बातों में हमारे परमेश्वर की एक बहुत बड़ी योजना थी । उन सब दुखों को यीशु ने इसीलिए उठाया था ताकि पृथ्वी पर सब लोगों के पापों का प्रायश्चित हो जाए । वह उस क्रूस पर इसीलिये मरा था ताकि जगत में हर एक मनुष्य को जीवन मिल जाए । अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पहले यीशु ने एक जगह कहा था, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु उसके द्वारा अनन्त जीवन पाए ।

अपने पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से अलग है, उसमें शारीरिक जीवन तो है परन्तु आत्मिक जीवन नहीं है। परन्तु धर्मी यीशु ने अपनी देह में दुख उठाकर और अपने आपको पापियों के लिये क्रूस के ऊपर बलिदान करके हर एक मनुष्य के पापों का प्रायश्चित किया था । और इस प्रकार उस ने हम सब को यह आशा दे दी है कि हम उस के द्वारा अनन्त मृत्यु से बचकर अनन्त जीवन मे प्रवेश कर सकते हैं । पाप के कारण हम परमेश्वर से अलग थे, परन्तु अब क्रूस के ऊपर अपने प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा हम परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकते हैं । क्रूस के ऊपर परमेश्वर के धर्मी पुत्र की मृत्यु हमारा ध्यान इस बात पर दिलाती है, कि हमारा परमेश्वर हम सबसे कैसा महान प्रेम रखता है । क्योंकि उसने हमारे पापों के बदले में हमें दन्ड देना न चाहा, परन्तु यीशु मसीह में होकर हमारे दन्ड को उसने स्वयं अपने ही ऊपर उठा लिया । और न केवल यीशु के क्रूस में हम परमेश्वर के महान प्रेम को ही देखते

हैं, परन्तु यीशु मसीह का क्रूस हमें इस बात की भी याद दिलाता है कि हमारा परमेश्वर एक सच्चा न्यायी है । वह पाप से घृणा करता है और प्रत्येक मनुष्य को उसके पाप का दण्ड अवश्य देता है । परन्तु क्योंकि वह हम सब मनुष्यों से एक अद्भुत प्रेम रखता है इसलिये हमारे दण्ड को यीशु मसीह में होकर उसने स्वयं अपने ही ऊपर उठा लिया था ।

यही कारण है कि प्रेरित पौलुस बाइबल में लिखकर एक अन्य स्थान पर यूं कहता है, कि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट तो मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है । (१ कुरिन्थियों १ : १ ८) । और यही कारण है , कि उसने यह भी कहा था, कि ऐसा न हो कि यीशु मसीह के क्रूस को छोड़कर मैं और किसी बात पर घमन्ड करुँ । कैसा अद्भुत और कैसा महान था पौलुस का घमन्ड !

क्या आप को किसी बात पर घमन्ड है ? किस वस्तु में आप गर्व अनुभव करते हैं ? क्या वह आपका घर है, या जायदाद हैं? क्या वह आपकी मोटर है या आपका कुल या आपका व्योपार हैं ? वह वस्तु कोई भी क्यों न हो, परन्तु यदि आपका गर्व यीशु मसीह के क्रूस के ऊपर नही हैं तो आपका सारा घमन्ड व्यर्थ है । लेकिन धन्य है वह मनुष्य जिसका गर्व यीशु मसीह का क्रूस है ।

एक मसीही की आशा

आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा था , कि "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लागों को सुसमाचार का प्रचार करो । जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा ।" (मरकुस १६:१५,१६) । यही

कारण है , कि आज मैं फिर से उसी सुसमाचार को लेकर आपके सामने उपस्थित हूं । क्योंकि प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का सम्बन्ध मनुष्य के उद्धार से है । यह एक बड़ी ही गम्भीर बात है । यह एक बड़ी ही विशेष, और प्रमुख और महान बात है । मान लीजिए, आप अच्छे से अच्छे गीत सुनकर अपने दिल को बहला लें, या अच्छे–अच्छे नाटक इत्यादि देखकर अपना मनोरंजन कर लें । मान लीजिये, आप हवाई जहाज़ में बैठकर सारे संसार को देख लें, या अच्छे से अच्छे कपडे पहिन लें और अच्छे से अच्छे खाने खा लें । और मान लीजिये, आप को बहुत सारा धन मिल जाए, और आप अपने लिये उन सब वस्तुओं को खरीद लें जिन्हें लोग पृथ्वी पर अपने सुख के लिये बटोरते हैं । पर क्या इनमें से कोई भी वस्तु ऐसी है जिनके द्वारा आपका उद्धार हो सकता है ? क्या इनमें से कोई भी वस्तु ऐसी है जिसे आप अपने साथ लेकर इस संसार से जाएगें ? एक बार ऐसे ही एक आदमी का दृष्टान्त देकर प्रभु यीशु ने कहा था, कि जब वह अपनी सम्पत्ति की बहुतायत पर फूल रहा था और अपने मन में सोच रहा था कि अब मै भविष्य में खूब खाऊंगा और पीऊगा और खूब सुख और चैन से रहूंगा । तो परमेश्वर ने उसी समय उससे यूं कहा था, कि हे मूर्ख, तेरा प्राण तो इसी रात तुझसे ले लिया जाएगा, तब जो कुछ तूने अपने लिये इकट्ठा किया है वह सब किसका होगा ? प्रत्यक्ष ही है, कि वह इन्सान वास्तव में मूर्ख था, क्योंकि उसने अपना भरोसा उन वस्तुओं पर रखा था जो अब उसके किसी भी काम नहीं आ सकती थीं न तो वे उसे जाने से रोक सकती थीं और न उसके साथ जा सकती थीं । उसके पास कोई आशा नहीं थी ।

परन्तु पौलुस के इन शब्दों पर ध्यान दें, उसने अपनी मृत्यु के समय कहा था, कि,"मेरे कूच का समय आ पहुंचा है । मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मै ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैने विश्वास की रखवाली की है । भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह

मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी, जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं " (२ तीमुथियुस ४:६–८) । कितनी बड़ी आशा पौलुस के मन में थी । वह मरने के लिये तैयार था । क्योंकि उसने अपने जीवन को उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह को सौंप रखा था । उसका भरोसा पृथ्वी की किसी भी वस्तु के ऊपर नहीं था, परन्तु उसका भरोसा उस यीशु पर था जो उसके पापों का प्रायश्चित था । उसने उस पर विश्वास किया था । उसने उसके सुसमाचार पर विश्वास किया था और उसकी आज्ञा को माना था ।

बाइबल में हम एक अन्य व्यक्ति के बारे में भी पढ़ते हैं, जिसने भविष्य में स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने के स्थान पर, पृथ्वी पर अपने वर्तमान धन को अपने जीवन में पहला स्थान देने का निश्चय किया था । उसके सामने यह चुनौती थी, कि क्या वह भविष्य में स्वर्ग में प्रवेश करके अनन्त जीवन को प्राप्त करना चाहता है, या अपने वर्तमान जीवन में पृथ्वी पर धन प्राप्त करना चाहता है ? और बाइबल हमें बताती है कि उस दिन उस व्यक्ति ने अनन्त जीवन के स्थान पर अपने धन को चुन लिया था । परन्तु पौलुस के निश्चय में एक बहुत बड़ी बुद्धिमानी थी, क्योंकि उसने पृथ्वी की वर्तमान सम्पत्ति के स्थान पर स्वर्गीय अनन्त जीवन को चुन लिया था । वह अपनी आत्मा के विशाल महत्व को समझता था । उसने इस बात को महसूस किया था कि यदि मनुष्य पृथ्वी पर सारे जगत की वस्तुओं को भी प्राप्त कर ले और अन्त में अपनी आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा । अनन्त जीवन के बहमूल्य मोती को प्राप्त करने के लिये पौलुस ने पृथ्वी पर अपना सब कुछ त्याग दिया था । अपने जीवन के उद्देश्य का वर्णन करके एक जगह लिखकर उसने यूं कहा था, कि :

जो–जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के

कारण हानि समझ लिया है । बरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ : जिस के कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ और उस में पाया जाऊँ, न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ जो व्यवस्था से है, बरन उस धार्मिकता के साथ जो मसीह यीशु पर विश्वास करने के कारण है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है । और मैं उसको और उसके जी उठने की सामर्थ को और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ । ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पँहुचू । यह मतलब नहीं की मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ, जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था । हे भाईयो" वह आगे कहता है, "मेरी भावना यह नहीं है कि मैं पकड़ चुका हूँ: परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊं, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है ।" (फिलिप्पियों ३:७–१४) ।

आज आपके पास क्या आशा है? किस आशा के साथ आप अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं ? क्या आप कह सकते हैं, कि पृथ्वी पर के इस जीवन के समाप्त हो जाने पर आप परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करेंगे ? यदि आप ने परमेश्वर के साथ अपना मेल स्थापित नहीं किया है तो आप कदापि ऐसा नहीं कह सकते । और परमेश्वर के साथ हमारा मेल केवल तभी हो सकता है जब हम अपने सब पापों से मुक्त हो जाएं क्योंकि परमेश्वर पवित्र है; उसमें एक भी पाप नहीं है, इसलिये वह किसी भी ऐसे मनुष्य के साथ संगति नहीं रख सकता जिसमें पाप है । परन्तु सब ने पाप किया है । पृथ्वी पर सब मनुष्य पापी हैं । कोई यह नहीं कह

सकता कि मुझमें एक भी पाप नहीं है । मनुष्य शारीरिक है और पाप के हाथ बिका हुआ है । और जो वह करता है उसको नहीं जानता, क्योंकि जो वह चाहता है, वह नहीं किया करता परन्तु जिस से उसे घृणा आती है, वही करता है । मनुष्य के शरीर में कोई अच्छी वस्तु बास नहीं करती, इच्छा तो उस में है, परन्तु भले काम उससे बन नहीं पड़ते । क्योंकि जिस अच्छे काम की वह इच्छा करता है, वह तो नहीं कर पाता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता है । मनुष्य जानता है कि भलाई क्या है, क्योंकि परमेश्वर ने उसके मन में इस बात को डाला है । परन्तु फिर भी वह बुराई ही करता है ।

भविष्यद्वक्ता यशायाह ने, परमेश्वर से प्रार्थना करके, बहुत समय पहिले यूँ कहा था, कि "तू तो उन्हीं से मिलता है जो धर्म के काम हर्ष के साथ करते, और तेरे मार्गों पर चलते हुए तुझे स्मरण करते हैं । देख, तू क्रोधित हुआ था, क्योंकि हम ने पाप किया, हमारी यह दशा तो बहुत काल से है, क्या हमारा उद्धार हो सकता है ? हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान है । हम सब के सब पत्ते की तरह मुर्झा जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु की तरह उड़ा दिया है । कोई भी तुझ से प्रार्थना नहीं करता, न कोई तुझ से सहायता लेने के लिये चौकसी करता है कि तुझ से लिपटा रहे ; क्योंकि हमारे अधर्म के कामों के कारण तूने हम से अपना मुंह छिपा लिया है, और हमें हमारी बुराईयों के वश में छोड़ दिया है ।" (यशायाह ६४:५–७) ।

तो क्या मनुष्य के पास उद्धार पाने की कोई आशा है ? कौन से अच्छे या भले काम करके वह अपने पापों से मुक्ति पा सकता है ? वास्तव में मनुष्य के जीवन में कोई ऐसा दिन नहीं गुज़रता जिसमें वह कोई पाप न करे । और यहां तक, कि उसके बहुतेरे ऐसे काम भी जिन्हें वह धर्म के काम समझकर करता है परमेश्वर के निकट मैले चिथड़ों के समान और अधर्म के काम

ठहरते हैं । क्योंकि सबसे पहिले तो मनुष्य निरा पापी है उसका मन और उसका सारा शरीर पाप के कोढ़ से अशुद्ध है । और फिर वह परमेश्वर की इच्छा पर न चलकर अपनी मर्ज़ी से उसे प्रसन्न करना चाहता है । सो हम देखते हैं, कि मनुष्य के पास कोई आशा नहीं है । वह अपने प्रयत्नों से न तो अपने आप को पाप से मुक्ति दिला सकता है और न ही वह इस योग्य है कि अपने प्रयत्नों के बल पर एक ऐसा जीवन व्यतीत कर सके जिस में कोई पाप न हो । परन्तु मनुष्य को पाप से मुक्ति पाने की आवश्यकता है: उसे एक ऐसे जीवन की आवश्यकता है जो पाप के दन्ड से मुक्त हो । क्योंकि यदि वह अपने पापों की क्षमा प्राप्त किये बिना अपने ही पापों में मरके इस संसार से चला जाएगा तो उसकी क्या आशा रहेगी ?

मित्रो, यह बात बड़ी ही गम्भीर है । इस बात का सम्बन्ध मनुष्य के जीवन से है । यह ज़िन्दगी और मौत का ही सवाल नहीं है, लेकिन यह सवाल हमेशा की जिन्दगी और हमेशा की मौत का है । क्या इस समय आप कुछ और सोच रहे हैं मैं चाहता हूँ कि इस समय आप सब कुछ छोड़कर मेरे साथ इस एक खास बात के ऊपर विचार करें, कि यदि मनुष्य अपने पापों की क्षमा प्राप्त किए बिना इस संसार से हमेशा के लिये चला जाएगा, तो उसकी क्या आशा रहेगी ?

यदि मनुष्य का उद्धार हो सकता है, यदि वह अपने पापों की क्षमा प्राप्त करके परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन सकता है, तो ऐसा केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही सम्भव हो सकता है । और परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार का वर्णन करके पवित्र बाइबल कहती है, कि जब हम निर्बल या अयोग्य ही थे तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा । (रोमियों ५:६) । अपने पुत्र यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने सारे जगत पर अपने अद्भुत प्रेम को प्रकट करके हमें उद्धार पाने की आशा दी है । पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर

के अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो यीशु मसीह में है अब हम पूर्ण रुप से धर्मी ठहराए जा सकते हैं । क्योंकि परमेश्वर ने यीशु को हमारे पापों का प्रायश्चित ठहराया है । (रोमियों ३:२४–२६) । यीशु की मृत्यु में परमेश्वर ने हर एक मनुष्य की मृत्यु को देखा था । क्योंकि उसने परमेश्वर के अनुग्रह से प्रत्येक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखा था । (इब्रानियों २:९) । इसलिये , परमेश्वर की बाइबल में लिखा है कि जब कोई भी मनुष्य यीशु की मृत्यु के सुसमाचार को सुनकर उस में विश्वास लाता है, और पाप के जीवन से अपना मन फिराकर यीशु के जीवन को पहिन लेने के लिये बपतिस्मा लेता है, तो पापियों के लिये धर्मी यीशु की मृत्यु के कारण परमेश्वर उस मनुष्य के सब पापों को क्षमा कर देता है । (यूहन्ना ३:१६ ; गलतियों ३:२६,२७) । परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के भीतर हमें अपने पापों से मुक्ति मिलती है । उसकी मृत्यु के कारण हमें अपने पापों से छुटकारा मिलता है, और उसके जीवन का पालन करने के कारण हमें यह आशा मिलती है कि भविष्य में हमारे लिये धर्म का एक मुकुट रखा हुआ है ।

मित्रो, सच्ची प्रसन्नता और सच्ची शान्ति और सच्ची आशा केवल यीशु मसीह में ही मनुष्य को मिल सकती है । जगत और जगत की सारी वस्तुएं नाशमान हैं । परन्तु जो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा को मानकर उस पर चलता है, बाइबल में लिखा है, कि वह मनुष्य सर्वदा बना रहेगा । (१ यूहन्ना २:१७) । परमेश्वर ने आपको नाश होने के लिये नहीं, परन्तु अनन्त जीवन के लिये बनाया है । क्या आपने अनन्त जीवन की आशा को पा लिया है?

मसीही जीवन

क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि इस कार्यक्रम को सत्य–सुसमाचार क्यों कहा जाता है ? सत्य वह है जो वास्तविक है, जो सच्चाई है, और सुसमाचार का अर्थ है एक खुशी की ख़बर या प्रसन्नता का समाचार । और क्योंकि इस कार्यक्रम में हम आपको यीशु मसीह की मृत्यु का संदेश देते हैं , इसलिये यह कार्यक्रम सत्य–सुसमाचार कहलाता है । क्योंकि यीशु मसीह की मृत्यु में ही वास्तव में "सुसमाचार " है । पाप में खोए हुए जगत के लिये यीशु की मृत्यु व्रास्तव में एक "प्रसन्नता का समाचार" है । यीशु मसीह को लोग गुरु कहते थे । उसके बहुत से अनुयायी थे । उसकी शिक्षाओं को सुनकर वे उससे प्रभावित होते थे, और उसके सामर्थपूर्ण कामों को देखकर वे आश्चर्य–चकित होकर कहते थे "कि सचमुच में तू परमेश्वर की ओर से आया है क्योंकि यदि ऐसा न होता, तो जो काम तू करता है उन्हें नहीं कर सकता था ।"परन्तु इन सब बातों के होते हुए भी यदि यीशु अन्य लोगों की तरह ही इस संसार से चला जाता, तो आज हमारे पास क्या आशा होती ? शायद हम यह सोचते, कि हमें अपने आप को दुख देकर अपने पापों का प्रायश्चित स्वयं ही करना है । या कदाचित हम ऐसा सोचते, कि जब तक हमारे पाप क्षमा नहीं होंगे तब तक हमें इस संसार में किसी न किसी रुप मे बार–बार आते ही रहना पड़ेगा । या फिर , हमारे पास क्या आशा होती ? क्या हमें इस जीवन के बाद स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाने की आशा होती ? या क्या इस जीवन में हमारे पास यह आश्वासन होता, कि हमारे पाप क्षमा हो चुके हैं और हम पाप के जीवन से आज़ाद हैं ?

मित्रो, यदि यीशु मसीह , परमेश्वर का पुत्र हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस पर परमेश्वर की इच्छा से न मरता तो आज पाप से उद्धार पाने की आशा हमारे पास न होती । हम परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा रखने के विपरीत नरक में जाने की आशा रखते । क्योंकि कौन से ऐसे अच्छे और प्रायश्चित के काम हम स्वयं कर सकते हैं जिन के कारण हम परमेश्वर के स्वर्ग में जाने के योग्य बन सकते हैं ? पृथ्वी पर अच्छे से अच्छा मनुष्य भी हकीकत में यह नहीं कह सकता कि उसने कभी कोई पाप नहीं किया है । आदम से लेकर आज तक जितने भी इन्सान हुए हैं सब ने पाप किया है और सब परमेश्वर से अपने ही पापों के कारण अलग हैं परन्तु परमेश्वर के पुत्र के सम्बन्ध में उसका वचन कहता है, कि न तो उस ने कोई पाप किया और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली । (१ पतरस २:२२) । और वह सब बातों में हमारी तरह परखा तो गया तौभी निष्पाप निकला (इब्रानियों ४:१५) । और फिर बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि "परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है । जिसने अपने आपको सबके छुटकारे के दाम में दे दिया । " (१ तीमुथियुस २:५,६) ।

जब यीशु लोगों के बीच में था तो एक बार उसने उनसे कहा था, "कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है, परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है ।" (यूहन्ना १२:२४) ।

गेहूं के दाने को या एक बीज को फलवन्त होने के लिये तीन विशेष स्थितियों से होकर गुज़रना पड़ता है । सबसे पहले हम देखते हैं, कि वह दाना या बीज़ अकेला होता है । उसका अस्तित्व अकेला होता है । यदि हम बहुत सारे दानों को लेकर एक थैले में बन्द करके रख दें तो वे सब बीज ऐसे ही अपने अपने अस्तित्व में अकेले ही पड़े रहेंगे । उनमें जीवन तो है,

परन्तु वह जीवन अकेला है, और इस कारण उस जीवन में कोई फल नहीं है । परन्तु उसी एक दाने या बीज को लेकर यदि आप भूमि में गाड़ दें, तो वह मिट्टी में मिलकर मर जाएगा, और कुछ समय के लिये अदृश्य हो जाएगा । परन्तु फिर कुछ ही समय पश्चात् वह एक नई देह के साथ फिर बाहर आ जाता है । और फिर उसी एक छोटे से बीज के द्वारा और अनेक बीज पैदा हो जाते हैं । परन्तु उस बीज की मृत्यु के बाद । क्योंकि जब तक वह भूमि में पड़कर मरा नहीं था तब तक वह केवल अपने आप में ही अकेला था । फल केवल मृत्यु के बाद ही उत्पन्न होता है । एक छोटे से गेहूं के दाने के भीतर सैंकडों और दाने कैद होते हैं, और उन सैकडौं दानों की आज़ादी उस एक दाने की मृत्यु पर निर्भर होती है । क्योंकि जब तक वह भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है, परन्तु जब वह मर जाता है तो बहुत फल लाता है ।

गेहूं के दाने का यह उदाहरण जिसे यीशु ने लोगों के सामने रखा था, इसके द्वारा वह उन लोगों को वास्तव में अपने ही बारे में बता रहा था । वह उन्हें हकीकत में यह बता रहा था कि जब तक उसकी मृत्यु नहीं होगी वह अकेला ही रहेगा, परन्तु जब वह मर जाएगा तो उसके द्वारा बहुतेरे हमेशा की ज़िन्दगी पाएंगे ।

जब हम प्रभु यीशु मसीह की सिद्धता तथा पवित्रता के ऊपर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं, कि उसके जैसा न तो संसार में कभी हुआ और न है । उसमें कोई पाप नहीं था, उसका जीवन पवित्र था । सो पवित्रता के दृष्टिकोण से यीशु वास्तव में पृथ्वी पर अकेला ही था । सब मनुष्यों में से केवल वही अकेला स्वर्ग में जाने के योग्य था । परन्तु मान लीजिए, यदि वह अकेला ही, मृत्यु के बिना, स्वर्ग पर उठा लिया जाता , तो मनुष्यों में से कितने स्वर्ग में जाने की आशा रख पाते? वह स्वर्ग पर उठा लिये जाने के योग्य था, उसमें कोई पाप नहीं था, वह परमेश्वर का

पुत्र था, उसे मनुष्यों की तरह मरने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वह चाहता तो मृत्यु के पहले ही स्वर्ग पर वापस चला जाता। परन्तु उसने ऐसा नहीं चाहा। क्योंकि वह जानता था कि मृत्यु के बिना वह अकेला है, और यदि वह ऐसे ही स्वर्ग पर जाएगा तो वह अकेला ही जाएगा।

इसलिये उसने लोगों से कहा था, कि मेरा मरना आवश्यक है। पृथ्वी पर उसके जीवन का उद्देश्य ही मरना था। वह जगत में मरने के लिये ही आया था। उसके चेले नहीं चाहते थे कि वह मरे। और इसलिये जब उसने उन्हें यह बताया था, कि वह समय निकट आ गया है जब कि मैं बहुत दुख उठाऊंगा और मार डाला जाऊंगा, और तीसरे दिन फिर जी उठूंगा। तो पतरस ने उससे कहा था, कि तुझ पर ऐसा कभी न होगा। परन्तु यीशु ने पतरस से कहा था कि तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है। (मत्ती १६:२३)। और जब लोगों की भीड़ उसे पकड़ने के लिये आई थी, तो पतरस ने उसे बचाने के लिये अपनी तलवार खींच ली थीं। परन्तु यीशु ने डांटकर उससे कहा था, कि अपनी तलवार काठी में रख, क्या तू चाहता है कि जो कटोरा मेरे पिता ने मुझे दिया है, उसे मैं न पीऊं ? (यूहन्ना १८:११)

यीशु मरने के लिये आया था। वह मरना चाहता था। क्योंकि वह अपनी मृत्यु के उद्देश्य को जानता था। उसने स्वयं यह कहा था, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है, परन्तु जब वह मर जाता है तो वह बहुत फल लाता है। जब वह क्रूस के ऊपर मरा था तो लोगों को उसकी मृत्यु में कोई विशेष बात नज़र नहीं आती थी। उसकी देह लोहू–लोहान दो डाकुओं के बीच एक लकड़ी के ऊपर टंगी हुई थी। और फिर उसकी देह को उतारकर एक कब्र के भीतर रख दिया गया था। क्या खुशी की बात थी उसमें ? कौनसा सुसमाचार था इस बात में ?

जब एक किसान खोदी हुई भूमि में बीज बिखेरता है तो उस समय वह एक नुकसान सा लगता है । परन्तु कुछ ही समय में जब उसी भूमि में से लहलहाती हुई फसल बाहर आती है तो उसकी हानि लाभ में बदल जाती है । ठीक ऐसे ही थी यीशु की मृत्यु भी जब वह मरा था और उसकी देह को एक कब्र के भीतर गाड़ दिया गया था तो उसके चेले हियाव छोड़कर बैठ गए थे । उन्होंने सोचा था कि अब सब कुछ खत्म हो चुका है । लेकिन जब वही यीशु तीसरे दिन कब्र में से बाहर निकल आया था, तो उनके आनन्द की सीमा न रही थी । उन्हें वे सब बातें याद आने लगीं थीं जो यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले उनसे कहीं थीं, और जिन पर उस समय उन्होंने विश्वास नहीं किया था । उन्हें याद हो आया कि, उसने कहा था, कि अवश्य है कि मैं दुख उठाऊं और मार डाला जाऊं, और मैं तीसरें दिन फिर जी उठुंगा । उन्होंने याद किया था कि यीशु ने कहा था कि मेरी मृत्यु के द्वारा जगत उद्धार पाएगा और मेरा लोहू जगत के पापों के छुटकारे के लिये बहाया जाएगा । (लूका २४:३६–४६ ; मत्ती २६:२६–२८) । और जब यीशु ने उन्हें आज्ञा देकर कहा था, कि तुम सारे जगत में जाकर मेरी मृत्यु के सुसमाचार का प्रचार करो और लोगों को बताओ कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा । (मरकुस १६:१५–१६) तो उन्होंने सब जगह जा–जाकर इस सुसमाचार का प्रचार किया था । और बाइबल हमें बताती है, कि पहिले ही दिन यीशु के सुसमाचार को सुनकर तीन हज़ार लोगों ने विश्वास किया था, और अपना मन फिराकर बपतिस्मा लिया था । इसके बात चार हज़ार लोगों ने प्रभु की आज्ञा मानी थी । और फिर हर एक दिन बड़ी संख्या में लोग प्रभु यीशु के सुसमाचार को मानने लगे थे । (प्रेरितों २–६) ।

परन्तु सोचिये, कि यदि यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित करने को न मरता तो आज हमारे पास क्या आशा होती ? लेकिन उसकी मृत्यु के कारण आज हम सबके पास उद्धार पाने की

आशा है। बाइबल में लिखा है, कि जो लोग यीशु में विश्वास लाकर उसकी आज्ञा को मानते हैं वे सब यीशु के साथ मर चुके हैं। परमेश्वर यीशु की मृत्यु के कारण उनके सब पापों को क्षमा करता है। (रोमियों ६)। "सो अब जो मसीह यीशु में हैं" बाइबल कहती है, "उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं : क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं।" (रोमियों ८:१)।

क्या आप यीशु में हैं ? यदि आप उस आत्मिक जीवन को प्राप्त करना चाहते हैं जिसमे शान्ति, आनन्द और आशा है, तो आवश्यक है कि पहिले आप अपने इस वर्तमान स्वार्थी तथा पापी जीवन के लिये मर जाएं। क्योंकि मृत्यु के बिना जीवन नहीं है। जब तक आप अपने लिये जीवित हैं, आप अकेले हैं। फलदायक जीवन केवल मृत्यु के बाद ही मिल सकता है। क्या आपने अपने जीवन को प्रभु यीशु मसीह को दे दिया है ? जब हम उस प्रभु को अपना जीवन दे देते हैं, जो हमारे लिये मरा था, तो वह हमारे जीवनों को लेकर हमें एक नया जीवन दे देता है। हम उसमें होकर नए इन्सान बन जाते हैं। प्रेम, धीरज, शान्ति और आनन्द जैसे आत्मा के फल हमारे जीवनों में फलने लगते हैं। वह हमारी बोल–चाल और चाल–चलन बदल देता है। वह हमें शारीरिक से आत्मिक बना देता है। और वह हमारा वर्तमान और हमारा भविष्य बदल देता है। परन्तु यदि आप प्रभु यीशु में विश्वास करते हैं, लेकिन आपके जीवन में आत्मिक फल नहीं हैं, तो इसका एकमात्र कारण यह है कि आप अभी तक जीवित हैं। जब तक आप का "मैं" नहीं मरेगा। जब तक आपका वह जीवन जिसमें स्वार्थ और पाप है नाश नहीं होगा, आप फल नहीं ला सकते। इसीलिये यीशु ने कहा था, कि, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो मेरे पास आओ। मैं तुम्हें, विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो। और मुझसे सीखो। क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।" (मत्ती ११:२८,२९)।

एक उद्धार पाया हुआ जीवन

कभी–कभी अकसर लोग हमसे पूछते हैं, कि मसीह का सुसमाचार सुनाने के लिये हम क्यों इतना अधिक परिश्रम करते हैं, क्यों इस काम में हम इतना समय और धन लगाते हैं ? इस बात का उत्तर प्रेरित पौलुस एक जगह बाइबल में लिखकर इस प्रकार देता है : "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट तो मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है ।" (१ कुरिन्थियों १:१८) । क्रूस की कथा "मसीह का सुसमाचार" है । पर अनेक लोगों के लिये यह कथा मूर्खता है । वे इसे सुनना नहीं चाहते । वे इसके लिये परिश्रम नहीं करना चाहते । वे इसके लिए अपना समय नहीं देना चाहते । वे इसके लिये अपना धन नहीं देना चाहते । क्योंकि वे शारीरिक हैं, केवल शारीरिक । उन्हें मनुष्य की आत्मा की कीमत का बोध नहीं है । वे स्वयं अपनी ही आत्मा के महत्व से परिचित नहीं है । उनका जीवन केवल खाना–पीना और हंसी ठट्ठा करना है । यदि उन्हें किसी बात की चिन्ता है तो वह यह है, कि हम क्या खाएंगे ? क्या पहिनेंगे ? और कहां रहेंगे ? वे इसके आगे और कुछ देख नहीं सकते । आत्मिक बातें उन्हें मूर्खता सी जान पड़ती हैं । मसीह का सुसमाचार उनके निकट मूर्खता है । परन्तु मित्रो, बाइबल का लेखक कहता है, कि हम उद्धार पानेवालों के निकट, अर्थात् जिन्हें अपनी आत्मा की चिन्ता है, उनके निकट मसीह के क्रूस की कथा परमेश्वर की सामर्थ है ।

यही कारण है, कि हम बार–बार आपका ध्यान मसीह के क्रूस की कथा के सुसमाचार पर दिलाते हैं । क्योंकि हम जानते हैं, कि यह वह शक्ति है, जो मनुष्य का पाप से उद्धार करती है ।

यह वह ताकत है, जो एक पापी को पवित्र बना देती है। यह वह सामर्थ है, जो इन्सान को पाप की ज़ंजीरों से मुक्त कराके उसे परमेश्वर के पास आने के योग्य बना देती है। इसीलिये प्रेरित पौलुस, बाइबल में लिखकर, एक स्थान पर कहता है कि, मैं सुसमाचार से नहीं लजाता क्योंकि वह हर एक विश्वास करने वाले के निकट उसके उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ है। (रोमियों १:१६)।

उद्धार मनुष्य की एक बहुत बड़ी आवश्यकता है। उद्धार का अर्थ है : मुक्ति, छुटकारा, और स्वतंत्रता। मनुष्य को पाप से मुक्ति की आवश्यकता है, उसे पाप से छुटकारे की आवश्यकता है तथा उसे पाप से स्वतंत्र होने की आवश्यकता है। क्योंकि पाप के कारण मनुष्य का अस्तित्व खतरे में है। मनुष्य का अस्तित्व केवल उसका वह बाहरी जीवन ही नहीं है जिसे वह खिलाता–पिलाता और पहिनाता और सुरक्षित रखना चाहता है। परन्तु मनुष्य का वास्तविक अस्तित्व उसकी वह आत्मा है जो उसका अन्दरूनी जीवन है। यही कारण है, कि यीशु ने एक बार कहा था, कि नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिए करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है। (यूहन्ना ६:२७)। मनुष्य का भीतरी जीवन वह जीवन है जो अनन्त है, जिसका अस्तित्व कभी मिटेगा नहीं, जो हमेशा विद्यमान रहेगा। इसीलिये प्रभु यीशु कहता है, कि उस जीवन को बचाने के लिये परिश्रम करो। कितना महान् परामर्श है यह ! और यदि मनुष्य अपनी आत्मा के अनन्त जीवन के महत्व को समझता है। यदि मनुष्य पाप के भयानक परिणाम को समझता है, तो वह इस बात पर अवश्य ही ध्यान देगा, कि नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, प्रभु यीशु ने सिखाया था, परन्तु उस भोजन के लिये परिश्रम करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।

मनुष्य का जीवन बड़ा ही छोटा है। बाइबल में मनुष्य के जीवन को घास में उगनेवाले फूल के समान बताया गया है, जो

खिलता है और फिर जल्दी ही मुरझा जाता है। बाइबल कहती है कि मनुष्य का जीवन भाप के समान है जो पानी में से निकलती है और फिर लुप्त हो जाती है। परन्तु मनुष्य का आत्मिक जीवन ऐसा नहीं है। उसकी आत्मा का अंस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता है, कभी लुप्त नहीं होता है। बाइबल हमें बताती है कि आदि में परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप, अर्थात् अपनी आत्मिक समानता पर उत्पन्न किया था। और परमेश्वर आत्मा है। (यूहन्ना ४:२४)। सो परमेश्वर का आत्मिक स्वरुप होने के कारण मनुष्य परमेश्वर की तरह अनन्त है। मनुष्य का जो जीवन घास के फूल की तरह मुरझा जाता है, और पानी की भाप की तरह लुप्त हो जाता है, वह उसका शारीरिक जीवन है। परन्तु उसका भीतरी और आत्मिक मनुष्यत्व अनन्त है। मित्रो, बाइबल हमें बताती है कि हम लोग जो आज पृथ्वी पर जीवित हैं, हम अनन्तकाल में हमेशा जीवित ही रहेंगे। क्योंकि हमें परमेश्वर ने अपने आत्मिक स्वरुप पर उत्पन्न किया है।

इस बात को दृष्टिकोण में रखकर आज हमारे सामने एक बड़ा ही भारी प्रश्न यह है कि जब वह निश्चित समय आएगा जबकि हमें अपने शरीर से अलग होना पड़ेगा, तो उस अनन्तकाल में प्रवेश करके हम कहां रहेंगे ? बाइबल अर्थात् परमेश्वर के वचन की पुस्तक से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि अनन्तकाल में मनुष्यों के रहने के केवल दो ही स्थान हैं, अर्थात् नरक जिसे बाइबल में आग की झील के समान बताया गया है, और स्वर्ग जिसमें केवल वे ही लोग प्रवेश करेंगे जिन्होंने अपनी आत्मा को पाप से मुक्त कराके पवित्र जीवन को पहिन लिया है। जब प्रभु यीशु स्वर्ग पर वापस जानेवाला था, तो उसने अपने अनुयायियों से कहा था कि, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि

मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहीं तुम भी रहो।" (यूहन्ना १४:१–३)। प्रभु यीशु अभी स्वर्ग में हैं, और वह वहां से एक दिन वापस आएगा, और अपने अनुयायियों को वह अपने साथ ले जाएगा ताकि वे जाकर उसके साथ वहीं रहें जहां वह है। परन्तु यह प्रतिज्ञा यीशु ने सब लोगों से नहीं की है पर केवल अपने अनुयायियों से की है। क्योंकि यीशु का अनुसरण करने के द्वारा, उसकी आज्ञानुसार जीवन व्यतीत करने के कारण, मनुष्य स्वर्ग में जाने के योग्य बन जाता है।

सबसे पहिले तो बाइबल हमें यह बताती है, कि पाप से मनुष्य का उद्धार करने के लिये यीशु ने अपने जीवन को बलिदान किया था। और दूसरी खास बात बाइबल हमें यह बताती है, कि यीशु ने पृथ्वी पर एक बड़ा ही अच्छा, नेक, और पाप–रहित जीवन व्यतीत किया था, ताकि मनुष्य उसके जीवन के आदर्श का पालन करके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन जाए। प्रभु यीशु का वर्णन करके बाइबल का लेखक एक जगह इस प्रकार कहता है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरुप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने–आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २:५–८)।

बाइबल के ये पद हमें बताते हैं कि यीशु परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ था। परन्तु पाप में खोए हुए मनुष्य की उसे ऐसी चिन्ता थी कि वह मनुष्य को पाप में नाश होने से बचाने के लिये स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया। और उसने नम्रता तथा दीनता का एक आदर्शपूर्ण जीवन व्यतीत किया। और वह

पिता परमेश्वर का ऐसा आज्ञाकारी रहा कि मनुष्यों के पापों का प्रायश्चित करने के लिये उसने क्रूस की जैसी भयानक मृत्यु भी सह ली ।

यीशु के बारे में बाइबल हमें यह भी बताती है, कि परमेश्वर का पुत्र होने के कारण वह अपनी मृत्यु के तीन दिन के बाद फिर से जी उठा था, और फिर स्वर्ग में परमेश्वर पिता के पास वापस लौट गया था । किन्तु, स्वर्ग में वापस लौटने से पहिले, यीशु ने यह आज्ञा दी थी, कि क्रूस पर पापियों के लिये उसके बलिदान की कथा का सुसमाचार जगत में सब लोगों को सुनाया जाए, और यीशु ने कहा था, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा । (मरकुस १६:१५,१६) । सो इससे हम यह सीखते हैं, कि जिस प्रकार यीशु का बलिदान मनुष्य के उद्धार के लिये आवश्यक था, उसी तरह से यह भी ज़रूरी है कि प्रत्येक मनुष्य यीशु में विश्वास लाए और बपतिस्मा ले । क्योंकि यीशु ने कहा है कि जो मनुष्य ऐसा करेगा "उसी का" उद्धार होगा । कोई भी मनुष्य जब इस प्रकार यीशु की आज्ञा का पालन कर लेता है तो वह अपने सब पापों से उद्धार प्राप्त करके यीशु का एक अनुयायी बन जाता है, अर्थात् वह अपना जीवन उसकी आज्ञानुसार व्यतीत करने लगता है । वह मनुष्य यीशु मसीह के नाम से अर्थात् एक मसीही कहलाता है, और वचन से या काम से जो कुछ भी वह करता है वह सब मसीह के अधिकार से करता है । (१ पतरस ४:१६; कुलुस्सियों ३:१७) । यह जानते हुए, कि उसके पापों का प्रायश्चित करने के लिये परमेश्वर का पुत्र यीशु क्रूस पर बलिदान हुआ था, वह एक ऐसा जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करता है जिसमें कोई पाप या बुराई न हो । और यदि उससे कभी कोई गलती हो जाती है तो वह जानता है कि मसीह में होने के कारण परमेश्वर उसे क्षमा करेगा ।

सो, मित्रो, मसीही जीवन एक बड़ा ही अच्छा जीवन है, यह एक उद्धार पाया हुआ जीवन है । एक ऐसा जीवन, जिसमें न

केवल इस जगत में ही आशा है, परन्तु जिसकी आशा इस जगत के बाद और भी बड़ी और महान् है—अर्थात अनन्तकाल में हमेशा परमेश्वर के साथ रहने की आशा । और मेरा विश्वास है, कि यदि आप जीवन की अनिश्चिता तथा नरक की भयानकता से परिचित हैं, और यदि आप अपनी आत्मा के अनन्त महत्व को समझते हैं, तो आप इस विश्वासपूर्ण तथा आशापूर्ण जीवन को अवश्य ही प्राप्त करेंगें । यह जीवन हमें परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह से मिलता है, जिसने हमसे इतना प्रेम रखा कि हमें पाप में नाश होने से बचाने के लिये उसने अपने आप को हमारे लिये बलिदान कर दिया । क्या आप उसमें हैं ?

एक तैयार जीवन

प्रत्येक मनुष्य इस पृथ्वी पर एक यात्री के समान है । पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह परमेश्वर के लोगों को लिखकर इस प्रकार कहता है, "हे प्रियो, मैं तुम से बिनती करता हूं कि तुम अपने आपको परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं बचे रहो ।" (१ पतरस २:११) । प्रत्येक यात्रा का कहीं न कहीं अन्त होता है । और मनुष्य के जीवन की यात्रा का अंत मृत्यु है । यह कहना कुछ अनुचित न होगा, कि मनुष्य मरने के लिये ही पैदा होता है । मनुष्य के जीवन में प्रत्येक दिन जो आता है और गुज़र जाता है, वह उस कदम के समान होता है जो उसे प्रतिदिन उसकी यात्रा के अंतिम चरण के कुछ और समीप ले आता है । परन्तु यात्रा यदि तैयारी के साथ न हो तो वह बड़ी ही कठिन यात्रा होती है । उसमें बेचैनी और भय होता है । यहां जिस बात को मैं आपको दर्शाना चाहता हूं वह बाइबल में लिखे इस वृतान्त से स्पष्ट हो जाती है,

जिसे अब मैं आप के सामने बाइबल में से पढ़ने जा रहा हूं।

प्रभु यीशु एक बार अपने चेलों के साथ एक यात्रा पर निकला था। वे लोग नाव पर सवार हुए और चल पड़े। किन्तु लिखा है, कि, "तब बड़ी आंधी आई, और लहरें नाव पर यहां तक लगीं, कि वह अब पानी से भरी जाती थी। और वह यानि यीशु, आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था। तब उन्होंने उसे जगाकर उससे कहा। हे गुरू, क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए जाते हैं ? तब उसने उठकर आंधी को डांटा और पानी से कहा। "शांत रह, थम जा :" और आंधी थम गई और बड़ा चैन हो गया। और तब यीशु ने उनसे कहा कि तुम क्यों डरते हो ? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं ?" (मरकुस ४:३७–४०)।

यहां हम देखते हैं, कि एक ही नाव के ऊपर एक साथ दो तरह के लोग सफ़र कर रहे हैं। एक ओर तो एक ऐसा यात्री है जो आंधी और तूफ़ान के बीच पड़ा सो रहा है, और दूसरी ओर उसी नाव पर सवार वे यात्री हैं जिनके प्राण डर के मारे निकले जा रहे थे। कितना बड़ा अन्तर यहां हमें देखने को मिलता है'। यीशु चैन के साथ पड़ा सो रहा था क्योंकि उसे अपनी मंज़िल का पता था। लेकिन चेले, दूसरी ओर डर के मारे कांप रहे थे, "हम नाश हुए जाते हैं।" वे भय के मारे चिल्ला रहे थे। यहां वे उस प्रभु के साथ थे जिसके सामर्थपूर्ण कामों को देखकर वे उसके पीछे हो लिये थे ; जिसका शब्द सुनकर मुर्दे जी उठते थे। परन्तु जब तूफ़ान आया तो वे भयभीत हो उठे। और यीशु ने उनसे कहा, कि "क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं ?" अर्थात्, यदि उन्हें यीशु पर वास्तव में विश्वास होता, तो उन्हें तूफ़ान या मृत्यु का कोई भय न होता। वह उनके साथ था, परन्तु उन्हें उस पर विश्वास न था !

आज संसार में अधिकांश लोग अपना जीवन डर के भीतर व्यतीत कर रहे हैं। चिन्ता और बेचैनी मनुष्यों में पृथ्वी पर सब जगह फैली हुई है। किसी को धन कमाने की चिन्ता है, तो किसी

को धन को सुरक्षित रखने की चिन्ता है। लोग समस्याओं से परेशान हैं। लोगों को भय है, कि कहीं तीसरा विश्व युद्ध न छिड़ जाए। आज मनुष्य का जीवन चिन्ता तथा भय से ऐसा घिरा हुआ है कि वह भय के साथ सोता है और भय के साथ उठता है और भय के साथ रहता है। उसे कल की चिन्ता है, कि कल क्या होगा ? और मनुष्य के इस सब भय और चिन्ता का कारण है, उसका अविश्वास, या गलत विश्वास, और उसका अनुचित दृष्टिकोण। जब यीशु इस पृथ्वी पर था, तो उसने लोगों को एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात बताई थी, और कितनी बड़ी भलाई मनुष्य स्वयं अपने ही साथ करेगा, यदि वह यीशु के इन शब्दों को आज मान ले। यीशु ने कहा था, "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहीं तेरा मन भी लगा रहेगा।" कितनी महान् शिक्षा हैं यह ! आज हम उसे बचाने की कोशिश कर रहें हैं जिसे हम नहीं बचा सकते। हम वहां इकट्ठा करना चाह रहे है जहां इकट्ठा किया नहीं जा सकता। हम वहां बना रहे है जहां बना नहीं रह सकता है। हम नाशमान को इकट्ठा कर रहे हैं और नाशमान को बना रहे हैं। और ऐसा करके हम सच्चाई में अपने आप को लूट रहे हैं। हम अपने जीवनों पर डाका डाल रहे हैं। क्योंकि अपनी जीवन यात्रा के अन्त में जहां हमें हमेशा के लिये रहने को जाना है– उस अनन्तकाल में जहां मनुष्य सदा विद्यमान रहेगा– उस जीवन के लिये हमने क्या इकट्ठा किया है ? उस जीवन के लिये हमने क्या तैयारी की है ? क्या वहां हमारा घर आग की झील होगी? क्या वहां हमारे वस्त्र आग की लपटें होंगी ? प्रभु यीशु ने कहा था, कि वहां रोना और दांतों का पीसना होगा। (मत्ती २५:३०,४६)।

मित्रो, यदि हम भय से मुक्त होना चाहते हैं; यदि हम चिन्ता

से स्वतंत्र होना चाहते हैं, तो हमें अपने दृष्टिकोण को बदलना होगा । "क्योंकि जहां तेरा धन है," प्रभु यीशु ने कहा था, "वहां तेरा मन भी लगा रहेगा ।" यदि हम पृथ्वी पर इकट्ठा करेंगे तो हमारा मन पृथ्वी की वस्तुओं पर ही लगा रहेगा, परन्तु यदि हम स्वर्ग पर एकत्रित करेंगे तो हमारा मन स्वर्गीय वस्तुओं की ओर लगा रहेगा । और जब यह बदलाव हमारे भीतर आ जाएगा, यानि जब हम पृथ्वी पर इकट्ठा करना छोड़कर स्वर्ग पर इकट्ठा करने लगेंगे तो एक अद्भुत शांति हमारे मन में आ जाएगी । फिर हम भय और चिन्ता में नहीं रहेंगे, जीवन में आनेवाले किसी भी आंधी या तूफ़ान से हम भयभीत नहीं होंगे । क्योंकि तब हमारा मन पृथ्वी पर नहीं परन्तु स्वर्ग पर होगा । हमारा भरोसा जगत पर नहीं परन्तु परमेश्वर पर होगा । जबकि किसी भी तूफ़ान के आने पर अन्य लोग उन अविश्वासी चेलों की तरह डर से चिल्लाकर कहेंगे कि "हम नाश होने पर हैं," हम यीशु की तरह शांत रहेंगे ।

ऐसी ही अद्भुत शांति की शिक्षा हमें बाइबल में पौलुस के जीवन से मिलती है । मसीह यीशु के पास आने से पहिले उसका जीवन पृथ्वी पर अन्य लोगों की ही तरह था । उसे अपनी शक्ति पर घमन्ड था, उसे मान–सम्मान प्राप्त करने की इच्छा थी । परन्तु जब उसने यीशु के बारे में सुना और उस पर विश्वास किया तो उसने अपना मन फिराया था ; और जैसा उससे कहा गया था, उसने तुरंत अपने पापों को धो डालने के लिये प्रभु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लिया था । (प्रेरितों ६:१–१४; २२:१६) । और इस प्रकार वह एक नया मनुष्य बन गया था । उसका जीवन–परिवर्तन हो गया था । अब वह मसीह का अनुसरण करना चाहता था । एक जगह बाइबल में लिखकर वह यूं कहता है, "परन्तु जो–जो बातें मेरे लाभ की थी । उन्हीं को मसीह के कारण मैंने हानि समझ लिया है । बरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं : जिसके कारण मैंने सब बस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा

समझता हूं, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूं ।" (फिलिप्पियों ३:७,८) । मसीह के अन्य अनुयायीयों को लिखकर वह आगे कहता है, "प्रभु में सदा आनन्दित रहो, मैं फिर कहता हूँ आनन्दित रहो । तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रकट हो : प्रभु निकट है । किसी भी बात की चिन्ता मत करो : परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किये जाएं । तब परमेश्वर की शांति, जो समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदयों और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी ।" (फिलिप्पियों ४ : ४ – ७) । और जब वह मरने पर था, तो अपने एक सहकर्मी को लिखकर वह इस प्रकार कहता है, "अब मैं अर्ध की तरह उंडेला जाता हूँ, और मेरे कूच का समय आ पहूंचा है । मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है । भविष्य में मेरे लिए धर्म का मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे नहीं, वरन उन सब को भी जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं ।" (२ तीमुथियुस ४ : ६–८) ।

मसीह का एक अनुयायी होने के कारण ; एक मसीही होने के कारण , पौलुस के पास यह आश्वासन था कि वह इस संसार से कूच करने को तैयार था । वह केवल एक मसीही कहलाता ही नहीं था, परन्तु वह वास्तव में यीशु मसीह का एक अनुयायी था । उसने मसीह की आज्ञाओं पर चलने की पूरी कोशिश की थी उसने मसीह का सा जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न किया था । और अब वह तैयार था । और न केवल वह इस जगत से जाने के लिये तैयार ही था, परन्तु उसके पास एक बहुत बड़ी आशा थी–उसने कहा था कि भविष्य में मेरे लिये धर्म का एक मुकुट रखा हुआ है । कैसी महिमान्वित आशा थी उस मसीही के पास ।

मित्रो, पौलुस का सा जीवन आज आप भी व्यतीत कर

सकते हैं । आप भी उसी की तरह शान्तिपूर्ण तथा आनन्दित जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आप भी अपनी मृत्यु के समय पौलुस की ही तरह कह सकते हैं, कि मेरे कूच का समय आ पहुँचा है मैं अब जाने के लिये तैयार हूँ भविष्य में मेरे लिये धर्म का एक मुकुट रखा हुआ है । परन्तु आप को उस निश्चय तथा विश्वास की आवश्यकता है जो पौलुस के पास था । पौलुस का विश्वास था कि मसीह परमेश्वर की इच्छा से मेरे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मरा था । उसने अपने जीवन को मसीह को सौंप दिया था । जब उससे कहा गया था, कि प्रभु की यह आज्ञा है कि तू अपने पापों को धो डालने के लिये बपतिस्मा ले, तो उसने तुरंत बपतिस्मा लिया था । (प्रेरितों ६:१४,२२:१६) । पौलुस ने मसीह के जीवन को अपने जीवन का आदर्श बनाया था । उसे पूरा निश्चय था कि जब प्रभु प्रकट होगा तो वह उसे धर्म का मुकुट, अर्थात स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा। वह प्रभु के मार्ग पर चलने के कारण पूरी तरह से तैयार था । और यदि हम भी वैसा ही करें जैसा कि पौलुस ने किया था तो हम भी उसी की तरह तैयार रहेंगे । और वास्तव में हमें तैयार होने की आवश्यकता है, क्योंकि पृथ्वी पर हमारी यह छोटी सी जीवन–यात्रा कभी भी समाप्त हो जाएगी, और हम उस अनन्तकाल में रहने के लिये सदा के लिये, चले जाएंगे, जहां रहने के केवल दो ही स्थान हैं । स्वर्ग पर वापस जाते हुए प्रभु यीशु ने कहा था, कि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ, और फिर आकर तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा, ताकि जहां मैं रहूँ, वहीं तुम भी रहो । (यूहन्ना १४:१–३) । यदि हम उस अनन्तकाल में, उस तैयार किए हुए स्थान में रहना चाहते हैं जिसे यीशु ने तैयार किया है, तो हमें चाहिए कि उसकी आज्ञा पर चलकर हम अपने जीवनों को तैयार करें ।

एक बदला हुआ जीवन

आज यदि मनुष्य को वास्तव में किसी के बारे में सुनने की आवश्यकता है तो वह यीशु है । न केवल हमें यीशु के बारे में सुनना ही ज़रुरी है, परन्तु हमें चाहिए कि हम उस पर विश्वास भी लाएं और उसकी आज्ञाओं को भी माने ताकि हम अपने पापों से उद्धार पाएं और परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन जाएं । प्रभु यीशु मसीह का सम्पूर्ण व्यक्तित्व बड़ा ही अद्भुत तथा साँमर्थपूर्ण था । यद्यपि वह मनुष्य था, परन्तु वास्तव में वह परमेश्वर का पुत्र था । उसका जीवन, उसकी शिक्षाएं और उसके काम सभी इस बात के प्रमाण है कि वह कोई मात्र मनुष्य नहीं था, परन्तु पृथ्वी पर मनुष्य के रुप में परमेश्वर था । वह इस ज़मीन पर लोगों की जिंदगी को बदलने के लिए आया था नीकुदेमुस से यीशु ने कहा था ; कि यदि कोई मनुष्य नए सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता । (यूहन्ना ३:३) । और यही काम करने के लिये यीशु पृथ्वी पर आया था । वह लोगों को नया बनाने के लिये, उन्हें नया ज़ीवन देने के लिये , उनके जीवनों को परिवर्तित करने के लिये स्वर्ग को छोड़कर जगत में आया था । पवित्र बाइबल में लिखा है कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए ।" (यूहन्ना ३:१६) । जब हम यीशु में विश्वास ले आते हैं और अपने जीवनों को उसे सौंप देते हैं तो हमारे जीवनों की दिशा बदल जाती है । पाप के कारण नाश होने के विपरीत पाप से हमें छुटकारा मिल जाता है, और नरक में जाने के डर से मुक्त होकर हमें स्वर्ग में जाने की आशा मिल जाती

है । क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि प्रभु यीशु ने अपने आप को बलिदान करके अपने खून से हमारे पापों का कर्ज़ा चुका दिया है । और अपनी देह को कुर्बान करके उसने हमारे सब पापों का प्रायश्चित कर दिया है (मत्ती २६:२६–२८) ।

जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने अपने सुननेवालों से कहा था कि तुम सच्चाई को जानोगे और सच्चाई तुम्हें आज़ाद करेगी । (यूहन्ना ८:३२) । जब हम यीशु को, जो मार्ग और सच्चाई और जीवन है, (यूहन्ना १४:६) । वास्तव में जान लेते हैं, तो न केवल वह हमें पाप से ही आज़ाद करता है, परन्तु मनुष्यों के बनाए रीति–रिवाज़ों और धर्म–उपदेशों से भी वह हमें आज़ादी दिलवाता है । परन्तु यह सब कुछ कोई आश्चर्यक्रम के द्वारा नहीं होता है । यह ऐसा नहीं है, कि हम कुछ भी न करें और वह हमारे जीवनों में कोई आश्चर्यक्रम करके हमें नया बना देगा और हमें सब प्रकार के अधर्म तथा आडम्बरों से आज़ादी दिला देगा । लेकिन वास्तव में यह नयापन हमारी ज़िन्दगियों में तब आता है, जब हम यीशु के बलिदान के सुसमाचार को सुनकर और अपने पापों से मन फ़िराकर एक नया जीवन व्यतीत करने का निश्चय करते हैं जब हम यीशु के जीवन को अपनाते है, जब हम उसके आदर्शों पर चलते हैं और उसकी आज्ञानुसार अपने जीवनों को बनाते हैं, केवल तभी हमारे जीवन नए बनते हैं ।

कुछ लोग सोचते हैं, कि जब तक उनके जीवन में कोई आश्चर्यक्रम नहीं होगा तो वे नया जीवन व्यतीत नहीं कर सकते । सो वे परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह अपना पवित्रात्मा उन पर भेजकर उनके जीवन में कोई आश्चर्यक्रम कर दे, ताकि उनका "नया जन्म" हो जाए और उनके जीवन परिवर्तित हो जाएं । परन्तु यह सच्चाई नहीं है । यदि हम चाहते हैं कि हमारे जीवन नए बन जाएं, बदल जाएं, या परिवर्तित हो जाएं, तो हमें अपने आपको बदलना आवश्यक है । हमें नया बनने के लिये अपने मनों को और अपने स्वभावों को बदलने की आवश्यकता है । हमें अपनी

इच्छा को और अपने दृष्टिकोण को बदलना चाहिए । बाइबल में प्रेरित पौलुस अपनी एक पत्री में लिखकर कुछ लोगों को एक जगह इस प्रकार कहता है, कि "परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके सांचे में ढ़ाले गए थे । और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए ।" (रोमियों ६:१७,१८) । वे लोग पहले पाप के दास थे, अर्थात् वे पहले अपने शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने में जीवन व्यतीत कर रहे थे । परन्तु जब उन्होंने प्रभु यीशु की मृत्यु का सुसमाचार सुना था तो उन्होंने उसकी आज्ञा को माना था तो उसने उन्हें पाप से छुटकारा दिलाया था । लेकिन फिर क्या हुआ ? प्रभु की आज्ञा मानने के द्वारा वे पाप के दासत्व से छूटकर धार्मिकता के दास हो गए थे । यानि पहले वे पाप में अपना जीवन बिताते थे, परन्तु अब वे धर्म के काम कर रहे थे । इसमें कोई आश्चर्यक्रम नहीं था । उन लोगों ने पापियों के लिये यीशु की दर्दनाक मृत्यु के बारे में सुनकर स्वयं अपना मन बदला था । वे पहिले इस बात से अज्ञान थे कि परमेश्वर उनसे इतना प्रेम करता है कि उन्हें पाप से मुक्ति दिलाने के लिये उसने अपने एकलौते पुत्र को बलिदान किया है । वे अज्ञान थे इस बात से कि यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा उनके और सारे जगत के पापों का प्रयश्चित किया है, और अब वह चाहता है, कि सब लोग उस पर विश्वास लाएं और अपने पापों से मन फिराएं और अपने—अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर उसकी आज्ञाओं पर चलकर एक नया जीवन बिताएं । परन्तु जब उन्होंने उसके चेलों से इस उपदेश को सुना था तो उन्होंने अपना मन बदला था, और उन्होंने अपने आप को यीशु को सौंप दिया था । यीशु के बिना पहिले वे पाप के दास थे, लेकिन अब, उसमें होकर वे धार्मिकता के दास बन गए थे । पहिले वे अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे और अपने शरीर और मन की मनसाएं पूरी करते थे । झूठ बोलना, चोरी

करना, मुंह से गन्दी बातें बोलना, लड़ाई–झगड़ा करना; पहिले यह उनका स्वभाव था । परन्तु अब उनका स्वभाव बदल गया था ।

यह कोई आश्चर्यक्रम नहीं था । परन्तु उन्होंने स्वयं अपने आप को बदला था । बाइबल कहती है, गलतियों ३:२७ में, कि जब कोई मनुष्य अपने सारे मन से मसीह में विश्वास लाकर बपतिस्मा लेता है, तो वह मसीह को पहिन लेता है । और उन्होंने ठीक यही किया था । उन्होंने मसीह के सुसमाचार को सुनकर और उस पर विश्वास लाकर अपने पुराने मनुष्यत्व को उसके सब कामों समेत उतार डाला था । मन फिराने का अर्थ यही है । पुराने स्वभाव से, पुरानी आदतों से, और पुराने कामों से मुँह फेर लेना । पुराने इन्सान को, पुराने और मैले कपड़ों के समान उतारकर फेंक देना । परन्तु जब हम पुराने और मैले कपड़ों को उतारकर फेंक देते हैं, तो नहाकर हम फिर दोबारा उसी मैले–पुराने कपड़े को नहीं पहिनते । पर हम उसके स्थान पर साफ़–सुथरे दूसरे कपड़ों को पहिनते हैं । और यही उन लोगों ने भी किया था, जिनके विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं कि पाप से छुड़ाए जाकर वे धर्म के दास बन गए थे । जब उन्होंने अपना मन फिराकर अपनी पुरानी इन्सानियत को उसके कामों समेत उतारकर फेंक दिया था, तो उन्होंने उस नई इन्सानियत को पहिन लिया था, जो मनुष्य को यीशु मसीह में मिलती है । इसलिये वे बदल गए थे, उनके जीवन बदल गए थे, और उनके चाल–चलन बदल गए थे । अब वे यीशु के समान जीवन व्यतीत करने में प्रयत्नशील थे । जब उन्हें कोई गाली देता था, तो वे पलटकर उसे गाली नहीं देते थे । वे झूठ नहीं बोलते थे, बुरे काम नहीं करते थे, जुआ नहीं खेलते थे और नशा नहीं करते थे क्योंकि यीशु कभी ऐसे काम नहीं करता था । यीशु के जीवन ने उन्हें परिवर्तित कर दिया था, उसकी शिक्षाओं ने उन्हें बदल दिया था, क्योंकि उन्होंने अपने आपों को पूर्णरुप से यीशु को सौंप दिया था । अब

वे नए बन गए थे ।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक के उन्नीसवें अध्याय में बाइबल में हम पढ़ते हैं कि जब एक जगह कुछ लोग प्रभु यीशु में विश्वास ले आए थे, तो उन्होंने अपने बुरे कामों को प्रकट में मान लिया था, और फिर आगे लिखा है कि "जादू करनेवालों मे से बहुतों ने अपनी–अपनी पोथियां इकट्ठी करके सब के सामने जला दी, और जब उनका दाम जोड़ा गया तो पचास हज़ार रुपए की निकली ।" (प्रेरितों १९:१९) । क्या यहां हम परिवर्तन को देखते हैं ? यहां वास्तव में हम एक बहुत बड़ा परिवर्तन देखते हैं । उन लोगों ने अपने मनों मे इस बात को अनुभव किया था कि वे झूठ बोलकर और लोगों को धोखा देकर पैसा कमा रहे थे । वे धर्म के नाम पर अपनी ठग–विद्या से लोगों को मूर्ख बना रहे थे । परन्तु अब वे बदलना चाहते थे; वे अपने जीवनों को यीशु को देना चाहते थे । लेकिन उन्होंने इस बात को महसूस किया था कि अपने जीवनों को यीशु को देने से पहले या यीशु के जीवन को अपने ऊपर धारण करने से पहले यह आवश्यक है कि वे उन सब वस्तुओं को अपने जीवन से अलग कर दें या उनसे मन फिरा लें जिनके कारण पाप होता है । और देखिए कि उन्होंने क्या किया था । उन्होंने अपनी सब पोथियों को लाकर इकट्ठा किया, और सब के सामने उनको जलाकर राख कर दिया । और इस बात पर भी ग़ौर करें, की उनकी कीमत पचास हज़ार रुपए के लगभग थी !

यह वास्तविक परिवर्तन था । अपने कामों से उन्होंने इस बात को प्रकट किया था कि अब उनके जीवनों में एक बदलाव आ गया है । यह केवल नाम का परिवर्तन नहीं था परन्तु यह मन का परिवर्तन था । बहुतेरे लोग अपना नाम तो बदल लेते हैं , परन्तु अपना मन नहीं बदलते । यद्यपि वे अपने आप को मसीही या मसीह का अनुयायी कहते हैं, परन्तु उनके जीवनों से पुरानी इन्सानियत की बू आती है । और यह इस बात का प्रमाण

है कि उन्होंने अपने पुराने मनुष्यत्व को अभी तक उतारकर नहीं फेंका है, और उस नई ज़िन्दगी को हकीकत में अभी तक नहीं पहिना है जिसमें पवित्रता और भलाई है जिसमें प्रेम है और धीरज है ; और शान्ति और आनन्द और संतोष है ।

जब हम प्रभु यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास ले आते हैं और यह जानते हुए कि उसने हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये इतने सारे दुख उठाए थे, और सलीब की भयानक मौत का दन्ड उठाया था, अपना मन सब प्रकार के पाप से फिरा लेते हैं । और मसीह की नई ज़िन्दगी को पहिन लेने के लिये बपतिस्मा ले लेते हैं । तो न केवल हमें भविष्य में उद्धार पाकर स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा ही मिल जाती है, परन्तु पृथ्वी पर हमारे वर्तमान जीवन भी बदल जाते हैं । क्योंकि यीशु में विश्वास लाकर हम सभी अन्य वस्तुओं पर से अपने विश्वास हटा लेते हैं । और पाप से अपना मन फिराकर हम यह निश्चय करते हैं कि अब आगे को हम पाप नहीं करेंगे । और यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेकर, उसे पहनकर हम अपना जीवन उसमें उसकी आज्ञानुसार व्यतीत करने का निश्चय करते हैं ।

क्या आपने उस नई ज़िन्दगी को पहन लिया है जिसे परमेश्वर हम सबको अपने पुत्र मसीह यीशु में देना चाहता है ? परमेश्वर की इच्छा को मानकर और उस पर चलकर आप उस नए जीवन को धारण कर सकते हैं । क्योंकि परमेश्वर ने सारे जगत से ऐसा प्रेम रखा है, कि उसने हर एक मनुष्य का उद्धार करने के लिये अपने एकलौते पुत्र को बलिदान किया है, ताकि हर एक वह मनुष्य जो उसमें विश्वास लाए अपने पाप के कारण नाश न हो परन्तु उसके द्वारा अनन्त जीवन पाए ।

एक नया जीवन

यह वास्तव में बड़ी ही आशीष की बात है कि न केवल परमेश्वर ने हमें बनाया ही है, और न केवल उसने हमें अपने जीवन में निश्चय करने की शक्ति ही दी है, परन्तु उसने हम सब पर अपनी इच्छा को भी प्रकट किया है । और यदि हम अपने जीवनों को वास्तव में सफ़ल बनाना चाहते हैं, यदि हम अपने जीवनों में सच्चा आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर की इच्छा को जानें और उस पर चलें । आज का मनुष्य एक जो सब से बड़ी गलती कर रहा है, वह यह है, कि वह सफ़लता को डिग्रियों और व्योपार में ढूंढ़ रहा है । प्रसन्नता तथा आन्नद को प्राप्त करने के लिये वह बिजली से चलनेवाले आधुनिक यंत्रों को इकट्ठा कर रहा है । नशीली वस्तुओं में मनुष्य मन की शान्ति खोज रहा है । परन्तु वास्तव में उसके पास कुछ भी नहीं है । और हकीकत यह है कि जो मनुष्य इन्हीं चीज़ों की खोज में लगा रहता है वह अन्त में अपने आपको भी खो देता है । बाइबल का लेखक एक जगह हमारा ध्यान एक बड़ी ही विचारपूर्ण बात के ऊपर दिलाकर इस प्रकार कहता है कि, " जब ईश्वर भक्तिहीन मनुष्य का प्राण ले ले, तब यद्यपि उसने धन भी प्राप्त किया हो, तौभी उसकी क्या आशा रहेगी ? (अय्यूब २७:८) । और जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने लोगों से कहा था कि, यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले परन्तु अन्त में अपने ही प्राण या अपनी ही आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा ? (मत्ती १६:२६) । इस बात की तरफ मनुष्य को ध्यान देने की सबसे अधिक आवश्यकता यदि कभी भी थी तो वह समय आज है । क्योंकि

आज मनुष्य ने अपना जीवन इतना अधिक व्यस्त बना लिया है कि उसके पास इतना भी समय नहीं है कि वह इस बात के ऊपर विचार करे कि उसके जीवन का उद्देश्य वास्तव में क्या है ? परमेश्वर ने उसे क्यों बनाया है ? और परमेश्वर उससे क्या चाहता है ? क्योंकि वह वयस्त है । अपने रहन–सहन या स्टैन्डर्ड को बढ़ाने के लिए वह दिन–रात काम–धन्धे में जुटा रहता है । मनोरंजन के लिये वह घन्टों टेलेविज़न के सामने बैठता है या फिर सिनेमा देखने जाता है । और सांसारिक ज्ञान को बढ़ाने के लिये वह पत्रिकाएं और पुस्तकें पढ़ता है । सो वह व्यस्त है । हां, वह व्यस्त है । परन्तु प्रश्न यह है, कि जब ऐसा मनुष्य अपनी देह को पृथ्वी के ऊपर छोड़कर परमेश्वर के यहां जाएगा तब वह किस आशा के साथ वहाँ जाएगा ? क्या वह परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश कर सकेगा ।

नि:संदेह, मनुष्य ने आज इस सिद्धांत को अपना लिया है, कि "खाओं–पिओ और खुशी मनाओ क्योंकि कल तो मर ही जाना है ।" परन्तु बात यह है, कि मरने के बाद क्या होगा ? क्या कभी आप ने इस बात पर ग़ौर किया है ? बाइबल का बुद्धिमान लेखक, सुलैमान एक जगह जवानों को सम्बोधित करके कहता है, कि "हे जवान अपनी जवानी में आनन्द कर, और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह, अपनी मन मानी कर और अपनी आंखों की दृष्टि के अनुसार चल । परन्तु ! यह जान रख कि इन सब बातों के विषय में परमेश्वर तेरा न्याय करेगा ।" इसलिये, "अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख" क्योंकि "पस्मेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का , चाहें वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा । " (सभोपदेशक ११:६; १२:१,१४) ।

आज कुछ लोग परमेश्वर का ठट्ठा करके कहते हैं , कि क़हां है परमेश्वर ? कौन है परमेश्वर ? वे परमेश्वर के न्याय को हंसी की बात समझते हैं । परन्तु परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता । बाइबल कहती है, कि मनुष्य जो कुछ बोता है वही

काटेगा । और जो अपने शरीर के लिये बोता है वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा परन्तु जो आत्मा के लिये बोता है वह आत्मा के द्वारा अन्नत जीवन की कटनी काटेगा । इसलिए, "धोखा न खाओ" बाइबल कहती है, क्योंकि, "परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता।" (गलतियों ६: ७,८) । आज बहुत से लोग उन लोगों की तरह धोखे में हैं जो पिछले ज़माने में नूह के दिनों में रहते थे । क्या आप ने उन लोगो के बारे में सुना है ? वे बड़े ही शारीरिक लोग थे, उन्हें अपनी आत्मा की कोई चिंता नहीं थी, वे अपने शरीर की लालसाओं को पूरा करने में लगे रहते थे। और उनका पाप यहां तक बढ़ गया था, कि परमेश्वर ने धर्मी नूह पर अपनी इच्छा को व्यक्त करके नूह से कहा था, कि अब मैं एक विशाल जल–प्रलय भेजकर पृथ्वी पर से सब लोगों को नाश करुंगा, परन्तु मैं तुझे तेरे परिवार समेत बचा लूंगा । और जल–प्रलय आने से पहिले नूह ने कई वर्षो तक लोगों को परमेश्वर के न्याय का प्रचार किया था, परन्तु उनमें से एक ने भी अपना मन नहीं फिराया था । और जब जल – प्रलय आया था तो वे सब के सब नाश हो गए थे।

मित्रो, परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा से कभी नहीं फिरता, परन्तु वह मनुष्य में अपने प्रेम के कारण धीरज धरता है, क्योंकि वह चाहता है, कि न्याय का दिन आने से पहले सब को मन फिराव का अवसर मिले। (२ पतरस ३ : ८–११) । परमेश्वर, जिस ने मनुष्य को बनाया है, सारी मानवता से अथाह प्रेम करता है । और उसके प्रेम का प्रमाण हमें उसके पुत्र यीशु मसीह की मृत्यु से मिलता है। जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिये क्रूस के ऊपर मर गया था । पवित्र बाइबल कहती है, कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु के कारण परमेश्वर ने अपने अद्भुत प्रेम को सारे संसार पर प्रकट किया है । यद्यपि उसके जीवन में कोई पाप नहीं था , वह धर्मी और निष्पाप था, परन्तु फिर भी परमेश्वर ने होने दिया था कि वह एक अपराधी की तरह क्रूस के ऊपर लटकाकर

मारा जाए । क्योंकि उसकी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर आपको और मुझे बचाना चाहता था । यीशु की मृत्यु वास्तव में एक बलिदान था । उसने स्वंय तो कोई भी पाप नहीं किया था, परन्तु अपनी मृत्यु के द्वारा उसने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित किया था । यीशु मसीह की मृत्यु में परमेश्वर ने जगत के ऊपर अपने प्रेम, और अनुग्रह और अपनी धर्मिकता को प्रकट किया है । उसकी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को एक अवसर दिया है, कि उसमें विश्वास लाकर हर एक इन्सान परमेश्वर के साथ अपना मेल कर ले । पाप के करण प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से अलग है । परन्तु यीशु के द्वारा फिर से हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो जाता है । और यह तब होता है, जब हम यीशु में अपने सारे मन से विश्वास लाकर अपने मन को पाप के जीवन से फेर लेते हैं और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेते हैं । बाइबल में लिखा है, कि ," पाप की मजदूरी तो मृत्यु है , परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है ।" (रोमियों ६: २३) । अर्थात, पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग करके नरक में ले जाता है, परन्तु प्रभु यीशु मसीह हमें पाप से मुक्त करके फिर से परमेश्वर के पास ले आता है ।

सो, एक ओर जबकि पाप के कारण नरक का अनन्त मृत्यु दन्ड है, दूसरी ओर, यीशु में परमेश्वर के अनुग्रह के कारण स्वर्गीय अनन्त जीवन है । और यह निश्चय हम सबको अपने लिये स्वयं करना है कि हम इन दोनों में से किस को पाना चाहते हैं । पर हम दोनों को एक साथ नहीं पा सकते । हम पाप में जीवन व्यतीत करके स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते । हम संसार के साथ प्रेम रखकर परमेश्वर के साथ दोस्ती नहीं रख सकते । " सो हम क्या कहें? बाइबल का लेखक कहता है, "क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो ? कदापि नहीं ।" क्योंकि, "हम जबकि पाप के लिये मर गए, तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताए ? और क्या तुम नहीं जानते, कि हम

जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें । क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे । क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें ।" "इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करें, कि तुम उसकी लालसाओं के आधीन रहो । और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपों, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौंपों, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो ।" (रोमियों ६: १–६,१२–१३) ।

यह वह जीवन है मित्रो, जो परमेश्वर की इच्छानुसार है । वह चाहता है कि हम सब अपने जीवनों को प्रभु यीशु मसीह में होकर व्यतीत करें । वह नहीं चाहता, कि हममें से कोई भी जन अपना जीवन पाप में बिताए । वह चाहता है कि हम सब अपने शरीरों को, सारे अंगों समेत , उसको सौप दें । वह चाहता है कि हम सब अपने पाप के पुराने जीवन को छोड़कर, उसके पुत्र यीशु में होकर धार्मिकता का एक नया जीवन व्यतीत करें । और धर्मिकता के उस नए जीवन को हमें देने के लिये परमेश्वर ने एक बहुत बड़ी कुर्बानी दी है । उसने अपने निर्दोष पुत्र को हमारे पापों का प्रायश्चित ठहराकर हमारे लिये बलिदान कर दिया है । उसे हमारे जीवनों की चिन्ता है, क्योंकि वह हम से प्रेम करता है, और नहीं चाहता कि हम अपने पापों के कारण नाश हों ।

परन्तु हम अपने जीवनों के साथ आज क्या कर रहे हैं ? हम किस दिशा में जा रहे हैं ? हमें चाहिए कि हम अपने विचारों

को और अपने मार्गो को बदलें । इससे पहले कि वह समय आए जब हम इस संसार से हमेशा के लिये उठा लिये जाएंगे, हमें इस बात का निश्चय करना आवश्यक है, कि उस अनन्तकाल में हम कहां रहेगें ? यदि हम परमेश्वर के साथ अनन्त काल में रहना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम आज उसकी आज्ञा को मानकर उसके साथ अपना मेल कर लें । पृथ्वी पर की वस्तुओं पर से अपना भरोसा हटाकर अपना विश्वास परमेश्वर के ऊपर रखें और उसकी आज्ञाओं का पालन करें ।

वास्तविक आनन्द मनुष्य को केवल उसी जीवन में प्राप्त होता है जो परमेश्वर की इच्छानुसार होता है, क्योंकि परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने पर मनुष्य जानता है कि वह जो कुछ भी करता है परमेश्वर उसे स्वीकार करेगा । उस में मनुष्य को भय नहीं होता और न किसी तरह की शर्म होती है, परन्तु वह जो कुछ भी करता है उसे खुशी के साथ करता है । ऐसे ही , सच्ची शान्ति मनुष्य को जगत की वस्तुओं में नहीं मिल सकती । संसार की सम्पत्ति बढ़ाना वास्तव में अपने ऊपर दुखों को बढ़ाना है । परन्तु सच्ची शांति मनुष्य को केवल तभी मिलती है जब उसे इस बात का ज्ञान हो जाता है कि परमेश्वर ने उसके सब पापों को क्षमा कर दिया है और अब वह अपने परमेश्वर से मिलने के लिये तैयार है ।

सो यदि आप परमेश्वर की बात मानकर उसके पुत्र यीशु के पास आएगें, और उसकी आज्ञा को मानेगें और उसके जीवन का पालन करेंगें, तो वह आपके जीवन को एक नया जीवन बना देगा । क्योंकि वह आपके जीवन को आप से ले लेगा और अपना जीवन आपको दे देगा । केवल तभी आपके पास वह जीवन होगा जिसमें संतोष है, और खुशी है, और शान्ति है, और आशा है ।

एक छिपा हुआ जीवन

मुझे प्रसन्नता है कि यह अवसर मुझे मिला है कि कुछ खास बातों को इस समय मैं आपके सम्मुख रखूँ । मैं यहां आप को कहानियां सुनाने के लिये उपस्थित नहीं हुआ हूँ । इस कार्यक्रम में हमारा यह उद्देश्य कदापि नहीं है कि इस समय को हम किसी प्रकार के मनोरंजन में व्यतीत करें । परन्तु इस समय हम बाइबल में से पढ़ना और सीखना चाहते हैं । हम जानना चाहते हैं, कि परमेश्वर अपनी पुस्तक में हमें क्या शिक्षा देता है । सो इस समय हम पूरी गम्भीरता के साथ परमेश्वर के वचन की बातों को सुनेंगे ।

आज हम अपने पाठ में देखेगें कि, बाइबल हमें बताती है कि एक मसीही व्यक्ति का जीवन एक छिपा हुआ जीवन है । एक मसीही वह मनुष्य है जिसने प्रभु यीशु मसीह के ऊपर विश्वास किया है और उसकी आज्ञा को माना है और जो उसके बताए हुए मार्ग पर चलता है । केवल " जॉन " या " पीटर" कहलाने से कोई मसीही नहीं बन जाता ; गले में सलीब या क्रूस लटकाने से कोई मनुष्य वास्तव में मसीह का चेला नहीं बन जाता । परन्तु जो मनुष्य यीशु मसीह में यह विश्वास करता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है और वह मेरे पापों का प्रायश्चित है और जो उसकी आज्ञानुसार जीवन व्यतीत करता है वह वास्तव में एक मसीही है । उसका जीवन, बाइबल कहती है, मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है । इसका अर्थ यह नहीं है, कि वह अपना जीवन छिपकर व्यतीत करता है, या अपने कामों को छिपकर करता है । क्योंकि प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि "तुम जगत की ज्योति हो । पर्वत पर बसा हुआ नगर छिप नहीं सकता । लोग

दीपक को जलाकर टोकरी के नीचे नहीं परन्तु दीवार पर रखते हैं, और वह घर के सब लोगों को प्रकाश देता है।" ऐसे ही "तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, महिमा करें।" (मत्ती ५ : १४–१६)। सो हम देखते हैं, कि जब कि एक ओर तो बाइबल कहती है कि मसीह के अनुयायियों का जीवन छिपा हुआ है, दूसरी ओर प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि मेरे अनुयायी जगत की ज्योति हैं, और जिस प्रकार पहाड़ पर बसा हुआ नगर नहीं छिप सकता उसी प्रकार मेरे अनुयायी जगत में नहीं छिप सकते, क्योंकि उनके काम और उनका चालचलन इस बात को प्रकट कर देगा कि वे कौन हैं। परन्तु फिर किस प्रकार एक मसीही का जीवन छिपा हुआ है ?

इस विषय में हम बाइबल में से कुलुस्सियों नाम की पुस्तक में से पढ़ेंगे। यहां लेखक पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखकर मसीह यीशु के अनुयायियों से यूँ कहता है कि "बपतिस्मे में तुम उस के साथ गाड़े गए और उसी के साथ जिलाए भी गए। यह उस विश्वास के द्वारा हुआ जो परमेश्वर की सामर्थ पर है, जिस ने मसीह को मरे हुओं मे से जिलाया।" (कुलुस्सियों २ : १२)। यहां परमेश्वर का प्रेरित मसीह के अनुयायियों को याद दिला रहा है, कि जिस समय वे बपतिस्मा लेने के द्वारा जल के भीतर गाड़े गए थे, जैसे कि एक मुर्दा इन्सान कब्र के भीतर गाड़ा जाता है, तो उसी समय, वह कहता है, जब तुम पानी में से बाहर निकले थे, तो तुम मसीह के साथ जिलाए गए थे। अर्थात तुम परमेश्वर की दृष्टि में मसीह की आज्ञा मानने के कारण मर चुके हो, और गाड़े जा चुके हो और फिर से जिलाए गए हो। सो वह आगे कहता है, "इसलिये यदि तुम मसीह के साथ जीवित किए गए, तो उन वस्तुओं की खोज में लगे रहो जो स्वर्ग की हैं, जहां मसीह विद्यमान है और परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान है। अपना मन पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर लगाओ, क्योंकि

तुम तो मर चुके हो और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है । जब मसीह, जो हमारा जीवन है, प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा में प्रकट किए जाओगे । इसलिये अपनी पार्थिव देह के अंगों को मृतक समझो, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, वासना, बुरी लालसा, और लोभ को जो मूर्तिपूजा है । इन्हीं के कारण परमेश्वर का प्रकोप आएगा । और जब तुम इन बुराइयों में जीवन व्यतीत करते थे तो तुम इन्ही के अनुसार चलते थें । परन्तु अब तुम भी इन सबको, अर्थात, क्रोध, रोष, बैर–भाव, निन्दा और मुंह से गालियां बकना छोड़ दो । एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने अपने पुराने मनुष्यत्व को उसके बुरे कार्यो सहित त्याग दिया है, और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृष्टिकर्ता के स्वरुप के अनुसार सत्य ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है । इसमें यूनानी और यहूदी, खतना और खतना–रहित, बर्बर स्कूती, पराधीन और स्वाधीन में कोई भेद नहीं परन्तु मसीह सब कुछ और सब में हैं । अतः परमेश्वर के उन चुने हुओं के सदृश जो पवित्र और प्रिय हैं, अपने हृदय में सहानुभूति, करुणा , दीनता, विनम्रता और सहनशीलता धारणा करो । यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो । जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो । और इन सब के ऊपर प्रेम को, जो एकता का सिद्ध–बन्ध है, धारण कर लो । मसीह की शान्ति तुम्हारे हृदयों में राज्य करे जिसके लिये वास्तव में तुम एक देह में बुलाए गए हो , और धन्यवादी बने रहो । मसीह के वचन को अपने हृदयों में बहुतायत से बसने दो, समस्त ज्ञान सहित एक दूसरे को शिक्षा और चेतावनी दो, अपने हृदय में धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ । वचन या कार्य से जो कुछ करो, सब प्रभु यीशु के नाम से करो और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो ।" (कुलुस्सियों ३ :१–१७) ।

इसलिये, हमें बाइबल जबकि यह बताती है कि प्रभु यीशु मसीह के अनुयायियों का जीवन एक छिपा हुआ जीवन है तो इसका अभिप्राय उस जीवन से है जो उनका पहला या पिछला जीवन था । वह ज़ीवन जिसमें गन्दे काम थे, जिसमें व्यभिचार, अशुद्धता, वासना, बुरी लालसा और सच्चे परमेश्वर की आराधना को छोड़ मूर्ति–पूजा का स्थान था । वह पुराना जीवन, जिसमें क्रोध, रोष, बैर–भाव, निन्दा और गालियां बकना था। और वह पहिला जीवन जो संसार की रीति पर चलता था – वह जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है । क्योंकि यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित है । उसे परमेश्वर ने सारे जगत के पापों के लिये प्रायश्चित ठहराया है । परमेश्वर की मनसा से उसका पुत्र यीशु जगत के सारे पापियों के लिये क्रूस के ऊपर बलिदान किया गया था। यद्यपि यीशु को क्रूस पर उन मनुष्यों ने चढ़ाया था जो उसकी शिक्षाओं के कारण उससे बैर रखते थे । परन्तु तौभी यह परमेश्वर की इच्छा से हुआ था । उसने अपनी मर्ज़ी को पूरा करने के लिये उन लोगों को इस्तेमाल किया था। पवित्र बाइबल यीशु के बारे में कहती है, कि उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे दुखों को अपने ऊपर उठा लिया। वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया और हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया । और परमेश्वर ने हम सभी के अधर्म का बोझ उस पर डाल दिया। (यशायाह ५३) । इसलिये, जब हम प्रभु यीशु मसीह के भीतर यह विश्वास ले आते हैं कि वह हमारे पापों के बदले में मारा गया था ; और उसने हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपने आप को बलिदान कर दिया था । और जब हम अपने पूरे मन से उसे परमेश्वर का पुत्र ग्रहण करके उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लेकर उसकी मृत्यु तथा उसके जी उठने की समानता को पहिन लेते हैं, तो हमारा पुराना या पहिला जीवन उस में छिप जाता है । चाहे अपने जीवन में हमने कितने भी पाप क्यों न किये हों, परमेश्वर उन

सब को प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के कारण क्षमा कर देता है । बाइबल में लिखा है , कि , "तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर की सन्तान हो । और तुममें से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है ।" (गलतियों ३ : २६,२७) ।

मसीह को पहिन लेने का अर्थ है, मसीह के भीतर आ जाना । उसे अपने जीवन का आदर्श बना लेना । उसके बताए हुए मार्ग पर चलना । उन बातों को मानना जिनकी आज्ञा उसने अपने नए नियम में दी है । उसने कहा था, कि यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो तो तुम मेरी आज्ञाओं को भी मानोगे । (यूहन्ना १४: १५) । और उसने कहा था , कि तुम्हारे कामों से यह प्रकट हो जायेगा कि तुम मेरे चेले हो । (यूहन्ना १५ : ८) । परन्तु आज अनेक लोग ऐसे है जो ऊपर के दिखावे से तो अपने आप को मसीह का अनुयायी बताते हैं, लेकिन अपने चाल–चलन से वे लोग मसीह के बैरी है, और वास्तव में मसीहीयत के नाम पर एक धब्बा हैं । क्योंकि उनकी बातों को सुनकर, और उनके चाल–चलन को देखकर , और उनके गन्दे जीवन और बुरे कामों को देखकर , बहुतेरे लोग हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पास नहीं आते । परन्तु, मित्रो ऐसे लोग वास्तव में मसीह के अनुयायी नहीं हैं । वे ऐसा सोचते तो हैं कि वे मसीही हैं, परन्तु सच्चाई में वे मसीही नहीं हैं । क्योंकि उन्होंने अभी तक अपने पुराने जीवन को उतारकर उस नए जीवन को नहीं पहिना है जो मनुष्य को उद्धारकर्ता मसीह में मिलता है ।

पर क्या आप परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करते हैं ? क्या आपका यह विश्वास है कि वह आपके पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ था ? यदि आप ऐसा मानते हैं, तो आपको चाहिए कि आप यीशु की आज्ञानुसार अपने सब पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लें । (प्रेरितों २ : ३८; मत्ती २८ : १९) । क्योंकि परमेश्वर ने अपने वचन

की पुस्तक में यह प्रतिज्ञा की है, कि यदि हम उसके पुत्र यीशु की आज्ञा को मानेगें तो वह हमारे सब पापों को क्षमा करेगा, और यदि हम उसकी आज्ञानुसार, उसके बताए हुए मार्ग पर चलेंगें, तो वह हमें स्वर्ग में अनन्त ज़ीवन देगा । (यूहन्ना ३ : १६; मरकुस १६ : १६; प्रकाशितवाक्य २ : १०; यूहन्ना १४ : ६) ।

एक नया इन्सान

मित्रो, बाइबल से एक बड़ी ही मुख्य शिक्षा हमें यह मिलती है, कि प्रत्येक मनुष्य को फिर से एक नया इन्सान बनना ज़रुरी है । वास्तव में यही एक खास बात है जिसे मुख्य रुप में परमेश्वर हमें अपनी बाइबल के द्वारा बताना चाहता है । वह चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य फिर से वैसा ही एक इन्सान बन जाए जैसा आरम्भ में वह बनाया गया था । बाइबल हमें बताती है कि जब परमेश्वर ने आरम्भ में मनुष्य को बनाया था तो उस समय मनुष्य परमेश्वर के ही समान पवित्र, धर्मी और निष्पाप था । और इसलिये मनुष्य परमेश्वर की संगति में रहता था । परमेश्वर उसका पिता था और वह परमेश्वर की संतान था । परमेश्वर के साथ उसकी उपस्थिति में रहने के कारण मनुष्य के पास न तो किसी प्रकार की कोई समस्या थी और न किसी तरह का कोई दुख था । मनुष्य का जीवन परमेश्वर के साथ सुखी था, क्योंकि उस में कोई पाप नहीं था । पवित्र बाइबल में लिखा है, कि जो कोई पाप करता है वह व्यवस्था, अर्थात परमेश्वर की इच्छा, का विरोध करता है और परमेश्वर की व्यवस्था का विरोध करना ही पाप है । (यूहन्ना ३ : ४) । वास्तव में, परमेश्वर ने मनुष्य को पहिले ही से यह चेतावनी दी थी, कि यदि वह उसकी आज्ञा का उल्लंघन करेगा तो वह उसी दिन मर जाएगा, यानि

वह परमेश्वर से अलग हो जाएगा, और परमेश्वर के साथ उसकी संगति समाप्त हो जाएगी । और बहुत समय न बीता था, कि मनुष्य अपने शरीर की अभिलाषाओं पर संयम न पा सका और उसने वह काम किया जिसे करने को परमेश्वर ने उसे मना किया था । उसने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ दी, और इस प्रकार अपने पिता और सृष्टिकर्ता परमेश्वर के विरोध में उसने पाप किया । इसके फलस्वरुप परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी संगति से अलग कर दिया, और उसने मनुष्य से कहा, कि जिस प्रकार तू मिट्टी में से निकाला गया था उसी प्रकार एक दिन फिर तू मिट्टी में मिल जाएगा । (उत्पत्ति ३) । इस तरह से, बाइबल हमें बताती हैं, कि मनुष्य पाप करके न केवल आत्मिक दृष्टिकोण से ही मर गया, परन्तु पाप के परिणाम स्वरुप दुखों का सामना करके वह शारीरिक रुप से भी मरने लगा ।

परन्तु बाइबल के द्वारा हमें यह संदेश मिलता है, कि परमेश्वर मनुष्य को फिर से एक नया इन्सान बनाकर उसे एक और अवसर देना चाहता है कि वह परमेश्वर के साथ अपना मेल कर ले, और फिर से उसकी संगति में वापस आ जाए । और न केवल यही, परन्तु बाइबल हमें यह भी बताती है कि मनुष्य को फिर से नया बनाने के लिये परमेश्वर ने क्या किया है , और किस तरह से मनुष्य एक नया इन्सान बन सकता है । इसलिये बाइबल हमें यीशु मसीह के बारे में बताती है । यीशु मसीह ने ज़मीन पर आकर इन्सान की मंज़िल को बदल दिया था । प्रत्येक मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर से अलग था और इस कारण आत्मिक रुप से मरा हुआ था । और न केवल इसी जीवन में वह आत्मिक मृत्यु की दशा में था, अर्थात परमेश्वर से अलग था, परन्तु वह एक ऐसी भयानक स्थिति में था कि जब वह पृथ्वी पर के जीवन को त्यागकर चला जाएगा तो वह अन्नत काल में हमेशा परमेश्वर से अलग रहेगा, अर्थात नरक में रहेगा । मनुष्य के पास कोई आशा नहीं थी । वह पाप के अंधकार में खोया हुआ

था। वह परमेश्वर से अलग और दूर था । लेकिन यीशु ने पृथ्वी पर आकर मनुष्य की दिशा को बदल दिया। यीशु ने मनुष्य की निराशा को आशा में बदल दिया । बाइबल यीशु मसीह के विषय में कहती है, कि वह "दूसरा आदम" है। बाइबल कहती है, कि पहिला आदम वह था, जिसके द्वारा पाप जगत में आया था, परन्तु दूसरा आदम वह है, जिसके द्वारा पाप से छुटकारा संसार में आया है। पहिले आदम ने परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन किया था। परन्तु दूसरे आदम ने परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया है। पहिले आदम के द्वारा मृत्यु जगत में आई थी, परन्तु दूसरे आदम के द्वारा जीवन जगत में आया है।

पवित्र बाइबल के अनुसार , यीशु ने "परमेश्वर के स्वरुप में होते हुए भी परमेश्वर के समान होने को अपने अधिकार में रखने की वस्तु न समझा उस ने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया कि दास का स्वरुप धारण करके मनुष्य की समानता में हो गया "। और "इस प्रकार मनुष्य के रुप में प्रकट होकर स्वयं को दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु वरन् क्रूस की मृत्यु भी सह ली। " (फिलिप्पियों २ : ६–८)। अपने पुत्र यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने सारे जगत पर इस बात को प्रकट किया है कि यद्यपि मनुष्य के पाप के कारण वह मनुष्य से अलग हैं, परन्तु फिर भी वह मनुष्य से प्रेम करता है। और इसलिये मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करने के लिये उसने अपने ही एकलौते पुत्र को सब पापियों के बदले में बलिदान कर दिया है। बाइबल कहती है, "सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे , तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगें ? क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उस के पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ , फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएगें ? " (रोमियों ५ : ६ – १०)।

परन्तु " पाप " तथा "पाप से उद्धार " दोनों व्यक्तिगत वस्तुएं हैं । बाइबल में लिखा है, कि " प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही

अभिलाषा से खिचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है । फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनमती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है ।" (याकूब १ : १४,१५) । सो प्रत्येक मनुष्य इसलिये पापी है क्योंकि उसने स्वयं पाप किया है । कुछ लोग सोचते हैं कि "सब मनुष्य इसलिये पापी हैं क्योंकि आदम ने पाप किया था और हम सब उसी आदम की संतान हैं ।" ऐसा सोचना गलत है । क्योंकि यदि यह बात सच है तो फिर कोई कह सकता है, कि परमेश्वर बड़ा ही अन्यायी है । क्योंकि अनेक बार मनुष्य का जन्म होते ही उसकी मृत्यु हो जाती है, कई बार छोटे–छोटे मासूम बच्चों की भी मृत्यु हो जाती है । सो यदि मनुष्य अपने जन्म से ही पापी है, तो वे छोटे बच्चे जो उद्धार पाने का अवसर प्राप्त किए बिना बाल अवस्था में ही मर जाते हैं अवश्य ही नरक में जाएंगे । परन्तु बाइबल की शिक्षा ऐसी नहीं है । प्रभु यीशु ने छोटे बालकों के बारे में कहा था कि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है । (मत्ती १८ : ३; १९ : १४) ।

उद्धार की आवश्यकता वास्तव में उन्हें है जो पापी हैं, जिन्होंने पाप किया है । यह सच है, कि बाइबल कहती है, कि सब ने पाप किया है । (रोमियों ३ : २३) । परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है, कि बाइबल यह कह रही है, कि दो माह के या एक वर्ष के शिशु ने पाप किया है । परन्तु वे लोग जो अपनी बाल अवस्था से पार हो चुके हैं, जो समझदार हैं, जो अच्छाई तथा बुराई में अन्तर समझ सकते हैं उन्होंने पाप किया है, और उन्हें उद्धार की आवश्यकता है । क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध काम किए हैं । परन्तु जो बात पाप के बारे में सच है वही बात उद्धार के बारे में भी सच है । जिस प्रकार, आदम के पाप करने से पाप तो जगत में आया, परन्तु उसके पाप के लिये हम दोषी नही हैं, क्योंकि बाइबल कहती है, कि जो प्राणी पाप करे वही अपने पाप के कारण दोषी ठहरेगा । (यहेजकेल १८ :२०) । ऐसे ही जब प्रभु यीशु मसीह जगत के पापों का प्रायश्चित करने के

लिये क्रूस के ऊपर मरा था, तो उसकी मृत्यु के द्वारा उद्धार तो जगत में आया, परन्तु सब लोगों का अपने ही आप उद्धार नहीं हो गया। लेकिन बाइबल में लिखा है, कि यीशु ने पुत्र होने पर भी दुख उठा–उठाकर आज्ञा माननी सीखी, और यूँ सिद्ध बनकर वह उन सब लोगों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया जो उसकी आज्ञा को मानते हैं। (इब्रानियों ५:८,९)। सो इसलिये यह आवश्यक है, कि प्रत्येक मनुष्य अपने पापों से उद्धार प्राप्त करने के लिये प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा को माने। और प्रभु यीशु ने आज्ञा दी है, कि प्रत्येक मनुष्य का उद्धार केवल तभी होगा जब वह अपने सारे मन से उसमें विश्वास लाएगा और पाप से अपना मन फिराएगा, और बपतिस्मा लेगा। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८)।

पवित्र बाइबल में लिखा है, कि "तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २७)। अर्थात यीशु मसीह के द्वारा हम फिर से परमेश्वर की संतान बन जाते हैं, क्योंकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है, और बपतिस्मा लेकर हम उसे पहिन लेते हैं या उसके भीतर हो जाते हैं। प्रभु यीशु मसीह के भीतर आकर हमारा जीवन बदल जाता है। उसमें हम अधर्मी से धर्मी बन जाते हैं। अपने पिछले जीवन से मन फिराकर हम उसे पहिन लेते हैं। वह हमारा नया जीवन बन जाता है। इसलिये बाइबल में यूं लिखा है : "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है।" (२ कुरिन्थियों ५ : १७)। बाइबल कहती है, कि "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों

६:३ –४) ।

मित्रो, परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य एक नया इन्सान बने । उसकी इच्छा है कि हर एक मनुष्य नए सिरे से जन्म लेकर मसीह को पहिन ले और उसमें एक नई सृष्टि बन जाए । और मसीह में एक ऐसा नया इन्सान बन जाए, जो मसीह की तरह परमेश्वर की हर एक बात माने और उसका सा निष्पाप जीवन व्यतीत करे । यह बात असम्भव नहीं है, परन्तु वास्तव में सम्भव है । क्योंकि मसीह ने भी पृथ्वी पर एक मनुष्य का सा जीवन व्यतीत किया था । और वह प्रत्येक बात में हमारी ही तरह परीक्षा में तो पड़ा था लेकिन वह फिर भी निष्पाप निकला था । और यदि हम उसे पहिन लेंगें, यदि हम उसके भीतर आ जाएंगे, और यदि हम, उसके जीवन को अपने जीवन का आदर्श बना लेंगे, तो वह हमें सामर्थ देगा कि हम भी उसका सा जीवन व्यतीत कर सकें । और यदि हम पृथ्वी पर उसका सा जीवन व्यतीत करेंगे तो उसके साथ स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी और सदा का आनन्द भी अवश्य पाएंगे ।

एक नई सृष्टि

सत्य सुसमाचार को सुननेवाले अपने सभी श्रोताओं का हम स्वागत करते हैं । इस कार्यक्रम में हम आप को प्रभु यीशु मसीह के अद्‌भुत सुसमाचार से परिचित करवाते हैं । क्योंकि हमारा विश्वास है कि जगत में मनुष्य को यदि किसी भी वस्तु की सबसे अधिक आवश्यकता है, तो वह वस्तु यीशु मसीह का सुसमाचार है । क्योंकि परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल हमें बताती है कि , "हर एक प्राणी घास की नाई है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल की नाई है, घास सूख जाती है, और फूल झड़

जाता है : परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा ।" (१ पतरस १ : २४, २५) । पवित्र बाइबल में लिखा है, कि एक दिन जगत की प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व मिट जाएगा, परन्तु जो लोग परमेश्वर की इच्छा पर चलते हैं वे सर्वदा बनें रहेंगें । (१ यूहन्ना २ : १७) । किन्तु, परमेश्वर की इच्छा पर चलने से पहिले आवश्यक है कि मनुष्य उसकी इच्छा को जाने । आज का मनुष्य बड़ा ही जिज्ञासु है, वह अनेक बातों को जानना चाहता है, वह अपने ज्ञान को बढ़ाना चाहता है, वह देश – विदेश की बातों को जानना चाहता है । वह समाचार – पत्रों को पढ़ता है , रेडियो और टेलेविज़न से समाचार सुनता है, क्योंकि वह जानना चाहता है कि पृथ्वी पर उसके चारों ओर क्या हो रहा हैं । परन्तु हममें से कितने ऐसे हैं जो परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं ? हम में से कितने हैं जो उसके वचन की बातों को प्रतिदिन पढ़ते या सुनते हैं ? हमें उसकी इच्छा को जानने की आवश्यकता है । क्योंकि हम उसकी सृष्टि हैं, और एक दिन हमें उसके पास लौटना है, हमें उसे अपना लेखा देना है । इस कार्यक्रम का एकमात्र उद्देश्य केवल यही है कि प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर की इच्छा को जान ले और उस पर चलकर अपनी आत्मा को बचा ले ।

प्रेरित पौलुस बाइबल में लिखकर एक जगह कहता है, "क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है, इसलिये कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिये मरा तो सब मर गए । और वह इस निमित्त सबके लिये मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएं परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा । सो अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यदि हमने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उस को ऐसा नहीं जानेंगे । सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो, वे सब नई हो गई । और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल–मिलाप कर लिया, और

मेल–मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है । अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल–मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उसने मेल–मिलाप का वचन हमें सौंप दिया । सो हम मसीह के राजदूत हैं : मानों परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है : हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल – मिलाप कर लो" क्योंकि, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं ।" (२ कुरिन्थियों ५ : १४ – २१) ।

मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि है । सम्पूर्ण सृष्टि में परमेश्वर ने केवल मनुष्य को ही अपनी समानता पर बनाया है । केवल मनुष्य ही परमेश्वर के समान आत्मिक है । मनुष्य को परमेश्वर ने अपनी महिमा के लिये बनाया था । वह मनुष्य से प्रेम करता था । वह चाहता था कि मनुष्य उस से प्रेम रखे और उसका आदर करे और उसकी इच्छा माने । परन्तु मनुष्य ने ऐसा नहीं किया, वह परमेश्वर की इच्छा पर चलना छोड़कर अपने मन की अभिलाषा के अनुसार चलने लगा । उसने परमेश्वर के आधीन होकर रहना नहीं चाहा । उसने अपने आप को परमेश्वर के समान बड़ा बनाना चाहा । और इस प्रकार लोभ तथा घमन्ड करके मनुष्य परमेश्वर की पवित्रता के स्तर से नीचे गिर गया था । पाप के कारण मनुष्य पवित्र तथ धर्मी परमेश्वर से अलग और दूर हो गया था । परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य से फिर भी प्रेम रखा । उसने मनुष्य को पापी से पवित्र बनाने के लिये एक बहुत बड़ा बलिदान दिया । एक ऐसा बलिदान जिसके भीतर एक अद्भुत प्रेम था, एक निराला तथा महान बलिदान । जैसा कि अभी हमने बाइबल में से पढ़ा था, कि यीशु मसीह हम सब के लिये मर गया । यीशु मसीह परमेश्वर के साथ स्वर्ग में था । वह वचन था और परमेश्वर के साथ था, और परमेश्वर था (यूहन्ना १ : १,२) । परन्तु मनुष्य और परमेश्वर का मेल कराने के लिये वह

स्वर्ग छोड़कर मनुष्य की समानता में होकर, पृथ्वी पर आ गया था। मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में पाप एक ऐसी दीवार के समान है जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग और दूर रखती है। पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह कहता है कि, "तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" (यशायाह ५९ : २)।

यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा पाप और अधर्म की उस दीवार को ढ़ा दिया है जिसे मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञानुसार न चलकर खड़ा किया था, और जिसके कारण मनुष्य परमेश्वर से दूर हो गया था। बाइबल कहती है, कि मसीह जगत के सब पापियों तथा अधर्मियों के लिये मरा था। यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने सम्पूर्ण मानवता के ऊपर अपने अद्भुत प्रेम को प्रकट किया है। क्योंकि जगत में कोई मनुष्य किसी धर्मी को बचाने के लिये भी मरना नहीं चाहेगा। परन्तु यीशु इसलिये मरा ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा जगत के सारे पापी और अधर्मी, चोर, डाकू, लुटेरे, और व्यभिचारी, सब उद्धार पा लें। (रोमियों ५ : ६ – ८)। परमेश्वर ने अपने प्रेम के कारण नहीं चाहा कि हम अपने अपराधों के कारण दोषी ठहराए जाएं, हम नरक में जाएं और हमेशा के लिये उस से दूर रहें। इस कारण उसने जगत के सारे पापों के लिये अपने पुत्र यीशु मसीह को मृत्यु दन्ड देकर दन्डित किया था। यीशु क्रूस के ऊपर जगत के प्रत्येक पापी तथा अधर्मी के लिये बलिदान हुआ था। यही कारण है कि अभी कुछ ही क्षण पहिले हमने बाइबल में से यूं पढ़ा था, कि "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाए।" यीशु में कोई पाप नहीं था। वह पाप – रहित था। वह पृथ्वी पर परमेश्वर था। लेकिन फिर भी वह एक पापी मनुष्य की नाई क्रूस के ऊपर मरा था। क्योंकि वह हम सब के पापों के बदले में परमेश्वर

की इच्छा पूरी करने के लिये मर गया था । और ऐसा परमेश्वर ने इसलिये किया था, ताकि हम उसमें, अर्थात यीशु मसीह में होकर अधर्मी से धर्मी बन जाएं, पापी से पवित्र बन जाएं, ताकि हमारा मेल उसके साथ हो जाए ।

इसलिये लिखा है, जैसा कि अभी हमने पढ़ा था, कि यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो वे सब नई हो गई । यानी जब कोई मनुष्य यीशु मसीह के भीतर आ जाता है, उसमें विश्वास लाकर और उस की आज्ञा को मानकर, तो वह एक नई सृष्टि , एक नया इन्सान बन जाता हैं । वह मनुष्य एक पापी से पवित्र तथा एक अधर्मी से धर्मी बन जाता है । यीशु मसीह में होकर हम परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाते हैं, परमेश्वर के साथ हमारा मेल हो जाता है । क्योंकि जिन पापों के कारण हम परमेश्वर से दूर और अलग थे उनका दन्ड यीशु में हमें मिल चुका है । इसी कारण बाइबल में यीशु को हमारा उद्धारकर्ता और छुटकारा देनेवाला कहकर सम्बोधित किया गया है । बाइबल कहती है, " क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो । और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया हैं उन्होंने मसीह को पहिन लिया है । " (गलतियों ३ : २६ , २७) । इसलिये जब हम यीशु मसीह में विश्वास लाते हैं कि वह हमारे पापों के बदले में मरा था, और यह निश्चय करते हैं कि अब हम पाप में नहीं परन्तु अपना जीवन मसीह में बिताएगें, और अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेते हैं तो हम मसीह को पहिन लेते हैं, यानि हम उस के भीतर हो जाते हैं । और उसके भीतर हम एक नई सृष्टि बन जाते हैं ।

मसीह को पहिन कर , उसके भीतर एक नई सृष्टि बनकर, हम उसके नाम से, यानि मसीही कहलाते हैं, और उसके लोगों की उस मन्डली में मिल जाते हैं जो मसीह की कलीसिया हैं । क्योंकि बाइबल में लिखा है ; कि जो लोग प्रभु की आज्ञा को

मानकर अपने पापों से उद्धार पाते हैं उन्हें मसीह अपनी मन्डली में मिला लेता है । (प्रेरितों २: ४७) । सो एक मसीही व्यक्ति एक नई सृष्टि है वह एक नया मनुष्य है । उसका नया जन्म हुआ है । (१ पतरस १: २२,२१) । उसने अपने पहिले जीवन की चाल छोड़ दी है, पहिले जीवन की बुरी बातें, बुरा चाल चलन, और बुरा व्यवहार छोड़ दिया है । वह मसीह में अपने पुराने जीवन तथा सब पापों के लिए मर चुका है । अब वह स्वयं नहीं परन्तु मसीह उस में रहता है । वह मसीह के जीवन का पालन करता है, उसके आदर्श पर चलता है, उसके स्वभाव को अपनाता है । पुरानी बातें बीत गई हैं, अब उसमें एक नयापन आ गया है । वह मसीह की नाई सब से प्रेम रखता है, अपने शत्रुओं के साथ भी प्रेम रखता है, किसी की हानि नहीं सोचता, मुंह से कोई गन्दी बात नहीं बोलता । उसका सारा जीवन मसीह में एक नया जीवन बन गया हैं ।

मित्रो, कितना ही अच्छा हो यदि जगत में आज सारे लोग परमेश्वर की इच्छा को मानकर और मसीह में होकर, इस नए जीवन को अपना लें, जो न केवल इन्सान को इन्सान के साथ प्रेम से रहना सिखाता है, परन्तु जिस में हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो जाता है । क्योंकि उस नए जीवन में हम मसीह के द्वारा प्रत्येक पाप से मुक्त होकर एक ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं जिसके लिये परमेश्वर ने मनुष्य को आरम्भ में बनाया था । क्या आप ने उस नए जीवन को धारण कर लिया है ? मैंने इस पुस्तक के द्वारा आपको उन बातों के बारे में बता दिया है जिनकी आशा परमेश्वर हम सबसे करता है । एक दिन अवश्य ही आप और मैं उस परमेश्वर के सामने उपस्थित होंगे । निश्चय आप के हाथ में है ।

सनी डेविड
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली 110049